आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं पर आधारित एक बेहतरीन पेशकश

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

माध्यमों की असफलता

हज़रत मौलाना
सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

“यह यन्त्र व माध्यम इस काम के लिए बिल्कुल पर्याप्त थे कि मुसीबतों और ख़तरों से घिरी और ज़ख़्मों से चूर इन्सानी दुनिया को दुनिया की जन्नत में तब्दील कर देते, जहां न कोई मुसीबत हो न मशक़्क़त, न भविष्य का डर, न माज़ी का भय, न आपस की जंगें हों, न दिलों की दूरियां, न ग़रीबी हो, न बीमारी लेकिन मैं पूछता हूं कि क्या इनमें से कोई इन्सानी ग़रज़ पूरी हुई? क्या दुनिया से ख़ौफ़ व बेचैनी का वजूद मिट गया? क्या ग़रीबी व परेशानी के बादल छट गए? क्या अब इन्सानों पर ज़ुल्म व ज़्यादती नहीं होती? क्या अमन व सलामती दुनिया को हासिल हो गई? क्या लोगों में भरोसा पैदा हो गया? साफ़ सी बात है कि जिस क़द्र इन्सानी इल्मो-फ़न ने तरक़्क़ी की, उस क़द्र ख़ुद इन्सान ने तरक़्क़ी नहीं की, यन्त्र व संस्थाएं तो बहुत तरक़्क़ी कर गए लेकिन इन्सानी रुझान और इन्सानी इरादों में कोई बेहतरी और सुधार पैदा नहीं हुआ।”

(अरमुग़ान-ए-फ़िरंग: 66)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

Aug 2025

महज़ वसाएल काफ़ी नहीं

“अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) ने अपना मैदान–ए–अमल ये नहीं बनाया कि वो सिर्फ़ इस कायनात की पोशीदा कुव्वतों का इन्किशाफ़ ही करें, उसको क़ाबू में लाएँ, उससे काम लें, वो आलात के मोजिद तो न थे लेकिन अच्छे इरादे, अच्छी नीयत और अच्छे मक़ासिद के मोजिद ज़रूर थे। जहाँ तक कुदरती दौलत व सिनअत का ताल्लुक़ है, आप को मालूम है कि ये चीज़ें हमेशा से इरादा–ए–इंसानी की ताबे और उस की रहीन–ए–मिन्नत रही हैं, लिहाज़ा जब भी इंसान का इरादा अच्छा इरादा और उस का मक़्सद पाकीज़ा मक़्सद हो तो वो अपनी महदूद ताक़त व दौलत, मामूली आलात और कमज़ोर व महदूद वसाइल से बड़े बड़े कारनामे अंजाम दे सकता है जो इस दौर का तरक़्क़ी याफ़्ता तमद्दुन अंजाम नहीं दे सकता और उसके ज़रिये वह इंसान और बनी–ए–नौ–ए–इंसान की वह ख़िदमत कर सकता है जो वो लोग अंजाम नहीं दे सकते जिन के पास वसाइल व आलात का बड़ा ज़ख़ीरा है, क्योंकि जब भी किसी चीज़ के अंजाम देने का अज़्म–ए–रासिख़ पैदा होगा तो नज़र से ओझल ताक़त सामने आ जाएगी, वसाइल भी पैदा होने लगेंगे, मुश्किलात पर क़ाबू भी हासिल होगा और वह अज़्म–ए–क़वी अपना रास्ता पहाड़ों और समुंदरों का जिगर पार कर निकाल लेगा और अगर हुस्न–ए–नीयत और अज़्म–ए–रासिख़ ही हासिल नहीं है तो वसाइल बेकार, आलात बेसूद हैं और मोजिदों की इजादें ज़ाया हैं। भूख और प्यास की शिद्दत, माँ की ममता, मोहब्बत की बेताबी और शौक़ की फ़रावानी कभी और किसी ज़माना में भी ज़्यादा इल्म या आलात की मोहताज नहीं रही है, हर ज़माना और हर दौर में वह अपनी ज़रूरत पूरी करती रही है, उस को मालूम है कि किस तरह अपना मक़्सद हासिल करे। अंबिया–ए–किराम ने अपने आला किरदार और हुस्न–ए–तरबियत से इंसान के अंदर एक ऐसा इरादा पैदा कर दिया जिस की वजह से वह मकारिम–ए–अख़्लाक़ को अपनाने और उनको अपनी ज़िंदगी का मक़्सद बनाने की उसी तरह तड़प महसूस करने लगा जिस तरह कोई भूख और प्यास का मारा, मोहब्बत करने वाली माँ या आशिक़–ए–बेताब महसूस करता है। नतीजा ये हुआ कि उस की राह ख़ुद आसान हो गई और वसाइल ख़ुद–ब–ख़ुद हासिल होने लगे जो उस ज़माना के एतिबार से काफ़ी थे, और इस तरह वह तमद्दुन वुजूद में आया जिस में इंसान ने अम्न–ओ–राहत और सरबुलंदी व सरफ़राज़ी का ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा पाया। वह तमद्दुन बिला–शुबहा महदूद और सादा था, उस में कोई पेचीदगी न थी, न कोई फ़लसफ़ियत थी, मगर उस के अंदर मुस्तक़बिल में ठोस और सही बुनियादों पर तरक़्क़ी–पज़ीर होने और वुसअत पाने की पूरी गुंजाइश थी।”

मुफ़क्किर-ए-इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

(अरमुग़ाने फ़िरंगः 62)

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक: 8 | अगस्त २०२५ ई० | वर्ष: 17

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

मुहम्मद हसन नदवी

सह सम्पादक

मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

अनुवादक

मुहम्मद सैफ़

हक़ीक़ी इल्म और बेमक़सद इल्म

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"बिलाशुब्हा क़यामत की निशानियों में से यह है कि माल की फ़रावानी होगी, क़लम (बेमक़सद तहरीरों) की कसरत होगी, तिजारत (व्यापार) का उमूम होगा और (शरहे) नाख़्वान्दगी बढ़ जाएगी।"

(कन्ज़ुल उम्मालः 38520)

E-Mail: markazulimam@gmail.com | www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी० 229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

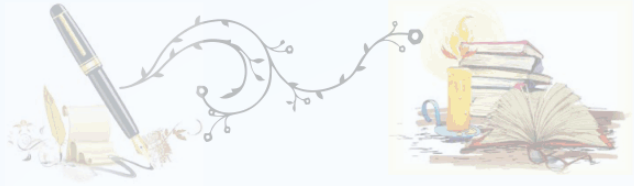

है दिल के लिए मौत

नतीजा-ए-फ़िक्र: अल्लामा इक़बाल रह०

यूरोप में बहुत रौशनी-ए-इल्म-ओ-हुनर है
हक़ ये है कि बे-चश्मा-ए-हैवाँ है ये ज़ुल्मात

रानाई-ए-तामीर में रौनक़ में सफ़ा में
गिरजों से कहीं बढ़ के हैं बैंकों की इमारात

ज़ाहिर में तिजारत है हक़ीक़त में जुआ है
सूद एक का लाखों के लिए मर्ग-ए-मुफ़ाजात

ये इल्म ये हिकमत ये तदब्बुर ये हुकूमत
पीते हैं लहू देते हैं तालीम-ए-मुसावात

बेकारी ओ उर्यानी ओ मय-ख़्वारी ओ इफ़्लास
क्या कम हैं फ़रंगी मदनियत की फ़ुतूहात

वो क़ौम कि फ़ैज़ान-ए-समावी से हो महरूम
हद उस के कमालात की है बर्क़ ओ बुख़ारात

है दिल के लिए मौत मशीनों की हुकूमत
एहसास-ए-मुरव्वत को कुचल देते हैं आलात

आसार तो कुछ कुछ नज़र आते हैं कि आख़िर
तदबीर को तक़दीर के शातिर ने किया मात

मय-ख़ाना की बुनियाद में आया है तज़लज़ुल
बैठे हैं इसी फ़िक्र में पीरान-ए-ख़राबात

चेहरों पे जो सुर्ख़ी नज़र आती है सर-ए-शाम
या ग़ाज़ा है या साग़र ओ मीना की करामात

तू क़ादिर ओ आदिल है मगर तेरे जहाँ में
हैं तल्ख़ बहुत बंदा-ए-मज़दूर के औक़ात

कब डूबेगा सरमाया-परस्ती का सफ़ीना
दुनिया है तिरी मुंतज़िर-ए-रोज़-ए-मुकाफ़ात

इस अंक में:

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस और हम.................................3

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

तक़वा क्या है?..4

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आर्टिफ़िशयल इंटेलिजेंस से फ़ायदा उठाने का शरई हुक्म......5

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

आर्टिफ़िशयल इंटेलिजेस – फ़ायदे और नुक़सान..................7

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस और खुदशनासी.........................9

डॉक्टर मुफ़्ती मुहम्मद आज़म नदवी

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस और फ़िक्ह–ए–इस्लामी...............11

मोहम्मद नज्मुद्दीन नदवी

इस्लामी तरबियत और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस................13

मुहम्मद मुसअब नदवी बाराबंकवी

ढूंढने वाला सितारों की गुज़रगाहों का..............................15

मोहम्मद अमीन हसनी नदवी

दीन की दावत और नवीन मीडिया.................................17

अब्दुल अली हसनी नदवी

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, तजज़िया, अंदेशे और मश्वरे.........19

मुहम्मद अरमग़ान बदायूनी नदवी

सम्पादकीय

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस और हम

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

दुनिया अपने मुख़्तलिफ़ ज़मानों में तरक़्क़ी की बुलंदियों तक पहुँची और फिर ज़वाल–ओ–अदबार का मुँह इस को देखना पड़ा। मौजूदा दौर जो साइंसी तरक़्क़ियों का दौर है और जिस ने दुनिया–ए–टेक्नोलॉजी के मैदान में वह तरक़्क़ी की है जिस का तसव्वुर भी पहले मुश्किल था, ये तरक़्क़ियात इंसानी ज़रूरतों को बेहतर तरीक़े पर पूरा करने में मुआविन भी हैं और बहुत सी इजादात वह भी हैं जो इंसान के लिए हलाकत का बाइस हैं। इन्हीं नए नए इक्तिशाफ़ात में ए.आई. (आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस) भी है। मसनूई ज़हानत इस वक़्त मसअला बनती जा रही है। जिस तरह इस में सहूलतें हैं, उसी तरह वह कहीं न कहीं लगता है कि एक आम इंसानी ज़हन से टकरा रही है और उस की सुरअत इंसानों के लिए मसाइल भी पैदा कर सकती है।

इंसान जो कुछ भी ईजाद करता है वह कोई अदम से वुजूद में लाने का अमल नहीं है। ये सिफ़त सिर्फ़ खुदा–ए–वहदहू ला शरीक की है। इंसान का काम सिर्फ़ इतना है कि वह हवादिस के ताने बाने जोड़ता है और नई चीज़ वुजूद में ले आता है। हक़ीक़त में वह नई शक्ल होती है जो मौजूदात को जोड़ कर एक नया तनासुब क़ायम करके ढाली जाती है। मसनूई ज़हानत भी इसी का हिस्सा है। मुख़्तलिफ़ इंसानी ज़हानतें इस में शामिल की गई हैं। ये कोई ऐसी नई चीज़ बनाने पर हरगिज़ क़ादिर नहीं जो इस में दाख़िल न की गई हो। इस की मामूली मिसाल "रट्टू तोता" की है जो उसको सिखा दिया जाए, वही बोलता है। फिर इस के बनाने वालों ने अपने मफ़ादात का भी इस में बड़ा लिहाज़ रखा है।

हक़ीक़त में ये कोई जानदार इंसानी ज़हन नहीं बल्कि इंसानी ज़हनों की पैदावार एक ऐसा रिकॉर्ड है जो वह मतलूबा मालूमात देता है जो इसमें मौजूद हैं। वह ताने बाने भी बुनता है और उस की रोशनी में भी मालूमात देता है।

ये एक ऐसी सूरत–ए–हाल है जो आम इंसानों के लिए मसाइल पैदा कर सकती है। इस के नतीजा में लोग ज़्यादातर काम इसी से निकालने लगे हैं। एक तरफ़ इस से बेरोज़गारी की शरह बढ़ती जा रही है, दूसरी तरफ़ वो इंसानी सलाहियतें जो खुदादाद हैं, वो इस्तेमाल न होने की वजह से कम होती जा रही हैं और ये अल्लाह का निज़ाम है कि जैसे–जैसे वसाइल पैदा होते गए, इंसान में वो सलाहियतें कमज़ोर होती गईं।

बहरहाल! ये एक सहूलत हासिल करने का बड़ा ज़रिया भी है। मामूली मुतालबा पर खूबसूरत काम सामने आता है। ताहम एक बड़ा नुक़सान तलबा और तस्नीफ़ ओ तहक़ीक़ का ज़ौक़ हासिल करने वालों को हो रहा है और इस के लिए बड़ी अमानतदारी की ज़रूरत है, वरना आने वाले दिनों में बड़ी ट्रेजेडी वुजूद में आ सकती है। इसी तरह ये भी डर है कि अगर इस की बाग हाथ से छूट गई तो न जाने ये घोड़ा कहाँ जाकर दम लेगा और कितने सरसब्ज़ ओ शादाब बाग़ात और खेतों को रौंदता आगे बढ़ जाएगा।

इस सूरत–ए–हाल में फिर वही इस्लाम का दिया हुआ अख़्लाक़ी निज़ाम सामने आता है और वही हुक्म–ए–रब और खुदा का पहला फ़रमान कानों में गूंजता है: {इक़रा बिस्मि रब्बिक} (पढ़िए अपने परवरदिगार के नाम से)

इल्म की जितनी क़िस्में "अख़्लाक़ी निज़ाम" से और "इस्मे रब" से टकराएँगी, वो दुनिया की तबाही का पेश ख़ैमा बनेंगी। इस में बड़ी ज़िम्मेदारी उस अख़्लाक़ी निज़ाम रखने वालों की है कि वो इसको अल्लाह के मुबारक नाम के साए में लाने की कोशिश करें और दुनिया भी सोचे कि वो कहाँ जाकर दम लेगी?!

तक़वा क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है, आप (स0अ0व0) से पूछा गया कि लोगों को कौन सी चीज़ सबसे ज़्यादा जहन्नम में दाख़िल करेगी? आप (स0अ0व0) ने फ़रमाया: "मुँह और शर्मगाह।" फिर पूछा गया कि कौन सी चीज़ सबसे ज़्यादा जन्नत में दाख़िल करेगी? फ़रमाया: "अल्लाह का तक़्वा और अच्छे अख़्लाक़।" (सुनन–ए–तिर्मिज़ी: 2004)

यह बहुत ही क़ीमती हदीस है जो ज़िंदगी के हर पहलू पर मुहीत है। हदीस में पहला सवाल "जहन्नम में दाख़िला" के बारे में है कि कौन सी चीज़ सबसे ज़्यादा जहन्नम में ले जाएगी। इस के जवाब में आप (स0अ0व0) ने दो चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया: एक मुँह और दूसरी शर्मगाह। आप (स0अ0व0) ने मुँह का जो लफ़्ज़ इरशाद फ़रमाया, उस में बज़ाहिर दो इशारे हैं: एक इशारा ख़ास तौर से ज़बान की तरफ़ है और दूसरा अक्ल–ए–हराम की तरफ़। आदमी इसी मुँह के चटखारों के लिए वो खाता है जो उस के पेट में आग लगाता है। हदीस में आता है कि अगर आदमी हराम माल का एक लुक़्मा भी हलक़ के नीचे उतारता है तो वो लुक़्मा "लुक़्मा–ए–तर" नहीं बल्कि "आग का अंगारा" है। गोया हराम माल से पेट का भरना जहन्नम की आग से पेट भरने के बराबर है। फिर यही अमल इंसान के जहन्नम में जाने का नतीजा भी बनता है, इसलिए कि लोगों की हक़ तल्फ़ी, लोगों का माल हड़प कर लेना और नाजायज़ तरीक़े पर उस को अपने क़ब्ज़ा में ले लेना और उस से नाजायज़ फ़ायदा उठाना ये वो चीज़ें हैं जो जहन्नम की तरफ़ ले जाती हैं।

हदीस में आता है कि क़यामत के रोज़ आदमी बहुत आमालयानी रोज़ा, नमाज़ और अच्छे कामों को लेकर आएगा लेकिन उस ने हक़ तल्फ़ी भी की होगी। किसी का नाहक़ माल खाना बड़ी हक़ तल्फ़ी है। ऐसी सूरत में ये नमाज़ें और इबादतें उस के काम नहीं आएँगी बल्कि जिन लोगों का उस ने हक़ मारा है, उनके लिए अल्लाह तआला का ये फ़ैसला होगा कि उस की नेकियाँ उन्हें दे दी जाएँ और जब नेकियाँ ख़त्म हो जाएँगी तो ये फ़ैसला होगा कि उनकी बुराइयाँ उस के सिर डाल दी जाएँ और हज़ारों नेकियों के बावजूद वो मुँह के बल जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। ये बहुत ही ख़तरनाक चीज़ है। आदमी ये न सोचे कि हम क्या खा रहे हैं? हम हराम खा रहे हैं या हलाल? आज के इस दौर में आदमी ये बिल्कुल नहीं सोचता कि पैसा कहाँ से आ रहा है और खाना कहाँ से आ रहा है? बस हमें ज़बान के चटखारे का ख़याल होता है।

आज असल मसअला उस यक़ीन का है जो हमारे दिलों से निकल चुका है। अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) की बातों पर वो यक़ीन नहीं जो होना चाहिए। हम ज़बान से कहते हैं कि यक़ीन है अगर ये भी न कहें तो ईमान ही ख़त्म हो जाएगा। लेकिन जिस तरह हमें मानना चाहिए और जिस तरह यक़ीन होना चाहिए, सच्ची बात ये है कि वो यक़ीन नहीं है। इसलिए हम इन चीज़ों की तरफ़ तवज्जोह नहीं देते।

मुँह को महफ़ूज़ रखने का एक तरीक़ा ये है कि आदमी हलाल खाए और जो कमाए वो सोच–समझ कर कमाए। जो ख़रीदे, तो उस को भी देखे कि कहाँ से ख़रीद रहा है। एहतियात करने वाले ग़ैर–मामूली एहतियात करते हैं। पहले ज़माना में बहुत से लोग आम नहीं खाते थे, यहाँ तक कि आम की चटनी भी नहीं खाते थे। वो कहते थे कि आम के बाग़ात ग़लत बेचे जाते हैं, दो साल की बय होती है और बौर आने से पहले बेच दिए जाते हैं। हालाँकि बद्वे–सलाह से पहले फलों का बेचना जाइज़ नहीं है। इसी वजह से वो लोग इस हद तक मुहतात रहते थे कि आम ही नहीं खाते थे इल्ला ये कि अगर कोई वज़ाहत कर देता कि ये मेरे बाग़ का फल है। मैंने इस को बेचा नहीं है, मैंने खुद ही उस की निगहदाश्त की है और मैं अपने ही बाग़ से इस को लेकर आया हूँ।

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस से फ़ायदा उठाने का शरई हुक्म

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस से फ़ायदा उठानाः

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस से फ़ायदा उठाना किसी मशीन से फ़ायदा उठाने जैसा है, जैसे किसी मशीन से जायज़ और नाजायज़ दोनों काम लिए जा सकते हैं, वैसे ही आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस (Artificial Intelligence) से भी दोनों तरह के काम लिए जा सकते हैं और जिस तरह किसी मशीन से जायज़ काम लेना शरीअत में जायज़ और नाजायज़ काम लेना शरीअत में नाजायज़ है, उसी तरह आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस का भी हुक्म है, और चूँकि अभी आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस तरक्की के मरहलों से गुज़र रही है, और बहुत से इम्तिहानों से गुज़रना बाक़ी है, इसलिए इसके इस्तेमाल में अभी एहतियात बरतनी चाहिए और फ़ौरन पूरा भरोसा नहीं कर लेना चाहिए।

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस का इस्तेमाल और चंद शरई उसूलः

ए आई के इस्तेमाल में शरअन कोई हरज नहीं है, लेकिन जिस तरह किसी भी चीज़ का जायज़ इस्तेमाल होता है, उसी तरह नाजायज़ इस्तेमाल भी हो सकता है और शरीअत में एक मुसलमान इस बात का मुकल्लफ़ है कि वह किसी भी चीज़ का नाजायज़ इस्तेमाल न करे। आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस का इस्तेमाल करते समय चंद उसूलों की पाबंदी ज़रूरी होगी, जो इस प्रकार हैं:

1. इसके ज़रिये धोखा देना नाजायज़ होगा। जिस तरह आम ज़िंदगी में धोखा देने से मना किया गया है, क्योंकि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः "जो हमको धोखा दे, वह हम में से नहीं।" (मुस्लिमः 69)

2. इसके ज़रिये झूठ फैलाना, चाहे क़ौल (वचन) से हो या फ़ेल (कर्म) से, नाजायज़ होगा। जैसे आम ज़िंदगी में झूठ बोलना और फैलाना नाजायज़ है, उसी तरह आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस से झूठ और फ्रॉड का फैलाव नाजायज़ होगा। हदीस में हैः "मुनाफ़िक़ की तीन निशानियाँ हैं: जब बात करे तो झूठ बोले, जब वादा करे तो वादा ख़िलाफ़ी करे और जब अमानतदार बनाया जाए तो ख़यानत करे।" (सही मुस्लिमः 59)

3. इसका इस्तेमाल बेहयाई, फ़ह्हशगोई (अश्लीलता) और बुराई फैलाने के लिए न किया जाए। अल्लाह तआला का फ़रमान हैः "अल्लाह (किसी की) बुरी बात का चर्चा पसंद नहीं करता, सिवाय उस शख़्स के जिस पर ज़ुल्म हुआ हो।"

4. इससे ना तो खुद को नुकसान पहुँचाए और ना किसी और को। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० की मशहूर हदीस है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः "ना खुद नुकसान पहुँचाना जायज़ है और ना नुक़सान का बदला लेना।" (सुनन इब्ने माजाः 2340)

बात का ख़ुलासा यह कि जिस तरह आम ज़िंदगी में एक मुसलमान पर शरीअत के तमाम अहकाम की पाबंदी लाज़मी है कि वह तमाम मुनकिरात से बचे, किसी पर ज़ुल्म न करे, धोखा न दे, उसी तरह आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस के इस्तेमाल में भी शरीअत के तमाम उसूलों का लिहाज़ रखना ज़रूरी होगा। लिहाज़ा यह जायज़ नहीं होगा कि किसी दूसरे शख़्स की फ़र्ज़ी वीडियो बनाकर उसकी अपनी आवाज़ में वह बात कहलवाई जाए जो उसने कभी कही ही नहीं। क्योंकि इसमें झूठ, धोखा और नुक़सान पहुंचाने जैसे कई फ़सादात मौजूद हैं। वल्लाहु आअलम।

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के ज़रिये लेख लिखनाः

जब हम कोई मज़मून तैयार करते हैं तो उसका पूरा मवाद मुख़्तलिफ़ किताबों से हासिल करते हैं। चूंकि हमने इस मवाद को अपने अंदाज़ में जमा किया होता है, इसलिए उसकी तस्नीफ़ व तालीफ़ की निस्बत अपनी तरफ करते हैं। यही वजह है कि अगर एक ही मौज़ू पर दो अलग अफ़राद कोई मज़मून लिखें, तो दोनों मज़मूनों में फ़र्क होता है। क्योंकि अगरचे दोनों ने एक जैसे मवाद से फ़ायदा उठाया, लेकिन तरतीब उनके ज़ौक़ और फ़हम के मुताबिक़ बदल जाती है। कभी कभी एक को ऐसे मवाद

मिलते हैं जो दूसरे को नहीं मिलते।

ठीक इसी तरह अगर दो लोग आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस से फायदा उठाकर एक ही मौज़ू पर मज़मून तैयार करें तो मेरी राय में उनके सवालात की तरतीब और तादाद के एतिबार से दोनों मज़मूनों में फर्क रहेगा। यानी अगरचे उन्होंने आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस से मदद ली, लेकिन मज़मून उनके ज़ौक़ के मुताबिक़ वुजूद में आया है, इसलिए वह मज़मून अपनी तरफ मंसूब कर सकते हैं। लेकिन लोगों को अस्ल हक़ीक़त बताना भी ज़रूरी होगा ताकि कोई ग़लतफ़हमी ना हो।

खुलासा यह कि अगर कोई मज़मून किसी शख़्स के सवालात के ज़रिये आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस से वुजूद में आया हो तो वह उसकी तरफ मंसूब किया जा सकता है और उसे "हक़े तस्नीफ़" भी हासिल होगा, लेकिन यह वाज़ेह कर देना ज़रूरी है कि मज़मून की तैयारी में ए आई से मदद ली गई है। वल्लाहु आलम।

हवाले की गई ज़िम्मेदारियों की अदायगी में आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस का इस्तेमालः

जो उस्ताद किसी तालीमी इदारे में तदरीस से वाबस्ता हों, या जो हज़रात किसी तस्नीफ़ी या दूसरे इल्मी काम के लिए किसी इदारे में मुलाज़िम हों, उनकी हैसियत फ़िक़्ही इस्तिलाह के मुताबिक़ "अजीर" की है। फिर अजीर की दो क़िस्में होती हैं: अजीरे ख़ास और अजीरे मुश्तरक। अजीर मुश्तरक वो है जो किसी एक के लिए काम नहीं करता या किसी एक के लिए ग़ैर मुअक़्क़त अमल करता है और अजीरे ख़ास वो है जो किसी एक के लिए तख़्सीस के साथ मुअक़्क़त तौर पर अमल करता है। अजीरे मुश्तरक उजरत का उस वक़्त मुस्तहिक़ होता है, जब वह अपना काम पूरा कर डाले, जैसे धोबी, दर्ज़ी वग़ैरह और अजीरे ख़ास उस वक़्त उजरत का मुस्तहिक़ होता है जब वह तय मुद्दत में अपनी ख़िदमात मुस्ताजिर के सामने पेश कर दे। (शामीः 4/44–48)

इसके बाद जब हम ग़ौर करते हैं तो जिनके नाम लिए गए हैं, उनमें से ज़्यादातर की हैसियत "अजीरे ख़ास" की होती है, उनकी ज़िम्मेदारी यह है कि उनके लिए जो वक़्त मुक़र्रर किया गया है, उनमें हवाले की गई ख़िदमत को अंजाम दें, वरना अगर वह उसमें कमी करेंगे तो ख़यानत करने वाले शुमार होंगे, चाहे वह हाज़िरी न दें या हाज़िरी दें लेकिन हवाले की गई ख़िदमत को अंजाम देने में कोताही करें तो फिर उनको इतनी मुद्दत तक की उजरत का इस्तेहक़ाक़ नहीं रहेगा। (शामीः 5/48)

लेकिन यह भी मुमकिन है कि उनमें से बाज़ की हैसियत अजीरे मुश्तरक की हो तो उस पर लाज़िम होता है कि मुफ़व्वज़ा काम को अंजाम दे और मुस्ताजिर के एहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी न करे, ख़िलाफ़वर्ज़ी करने पर बाज़ औक़ात इजारा फ़ासिद हो सकता है और उस पर ज़मान तक लाज़िम आ सकता है।

इस तफ़सील के बाद यह कहा जा सकता है कि अगर उस इदारे ने जहां मज़कूरा शख़्स मुलाज़िम है, या उस शख़्स या इदारे ने जिसने उस शख़्स को काम सौंपा है, यह शर्त लगा दी थी कि आप यह काम ख़ुद करेंगे, आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस या किसी और शख़्स से मदद नहीं लेंगे तो उस शख़्स के लिए इस शर्त को पूरा करना लाज़िम है, लेकिन अगर इस तरह की कोई शर्त नहीं लगाई गई तो आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस की मदद से हवाले किया गया काम अंजाम दे सकता है, इसलिए अजीरे मुश्तरक को तो तय काम ही के लिए अजीर रखा जाता है और उसने वह काम कर दिया है, रहा अजीरे ख़ास तो उसको उसको तय वक़्त में तय काम करना था, अगर वह उन औक़ात में हाज़िरी देते हुए आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस की मदद से हवाले किया गया काम अंजाम दे रहा है तो ज़ाहिर है कि वह अपनी उजरत का हक़ रखता है। "बदाए" में हैः "और अजीर को हक है कि वह खुद या अपने अजीरों के ज़रिये काम को अंजाम दे, बशर्ते कि अक़्द में यह शर्त न हो कि वह अपने हाथ से काम करना है।" (बदाए सनाएः 4/69)

"हिदाया" में हैः

"और जब कारीगर पर यह शर्त लगाई जाए कि वह खुद से काम करेगा तो उसे इख़्तियार नहीं कि किसी और से काम कराए इसलिए कि मअक़ूद अलैह मुअय्यन महल में काम करता है (आगे लिखते हैं) और अगर काम करने को मुतलक़ रखा गया तो उसे इख़्तियार होगा कि वह किसी को मज़दूरी पर रख ले जो वह काम अंजाम दे।"

(हिदाया मआ नताइजुल अफ़कारः 8/21–22)

खुलासा यह कि अगर साफ़ साफ़ आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस के इस्तेमाल से मना न किया गया हो और वह शख्स आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस की मदद से मुफव्वज़ा काम को अच्छे तरीके से अंजाम दे रहा हो, तो शरीअत में इसमें कोई हरज नहीं है और वह अपनी पूरी तनख़्वाह और उजरत का मुस्तहिक़ होगा। वल्लाहु आअलम।

आर्टिफ़िशयल इंटेलिजेंस

फ़ायदे और नुक़सान

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

परिभाषाः आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस (Artificial Intelligence) में "इंटिलिजेंस" (Intelligence) से मुराद मशीनों को दी गई जानकारी की बुनियाद पर सूझबूझ के साथ फैसला करने या कार्रवाई करने की सलाहियत है। इंसानों को ज़हीन मख़लूक़ कहा जाता है क्योंकि हम अपने आस–पास से जानकारी जमा करके आज़ादाना फैसले कर सकते हैं।

कहा जा सकता है कि आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस एक ऐसी टेक्नोलॉजी या निज़ाम है जिसके ज़रिए कंप्यूटर या मशीनें इंसानी इंटिलिजेंस से मिलती–जुलती तरह काम अंजाम देती हैं। इसमें मशीनें खुद से सीखने, तजुर्बों से नतीजे निकालने और नए हालात के मुताबिक़ खुद को ढालने के क़ाबिल होती हैं।

इतिहासः तीन साल पहले 2022 में जब चैट जीपीटी इंटरनेट पर आया, तब एक हंगामा बरपा हो गया था क्योंकि आम लोग एआई से कभी यूं रूबरू हुए ही नहीं थे मगर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, (AI) या 'मशीन लर्निंग' के मॉडल काफी अर्से से हमारे बीच मौजूद रहे हैं।

1950 की दहाई में एक रिसर्च में ऐसी ज़हीन मशीनें बनाने के बारे में लिखा गया था जो फैसले करने और अमल करने की सलाहियत रखती हैं। इसके कुछ साल बाद आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस की इस्लाह बाक़ायदा तौर पर डार्टमाउथ कॉलेज में होने वाली एक कॉन्फ्रेंस में जॉन मैक्कार्थी नामी कंप्यूटर साइंटिस्ट ने पेश की। मैक्कार्थी ने तजवीज़ पेश की कि कैसे मशीनों को ज़बानें इस्तेमाल करने, तसव्वुरात बनाने, इंसानों के लिए मुख़्तस किस्म के मसाइल को हल करने और खुद को बेहतर बनाने का तरीका भी शामिल हो। सन् 2000 यानी 21वीं सदी की शुरुआत में होंडा का (Asimo Robot) मंज़र–ए–आम पर आया जो इंसानों की तरह काम करता था, होटलों में ग्राहकों तक ट्रे पहुँचाने का काम करता था। इसी साल (Kismet Robot) नामी रोबोट ईजाद हुआ जिसमें इंसानी जज़्बात को समझने और उनकी नकल करने की सलाहियत थी। 2014 में मंज़र पूरी तरह बदल गया जब गूगल की बिना ड्राइवर वाली कार ने खुद ड्राइव करते हुए इम्तिहान पास किया। 2016 में इंसान नुमा Sophia Robot सामने आया जो किसी मुल्क की शहरीयत हासिल करने वाला पहला रोबोट बन गया।

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस की किस्में:

1– कमज़ोर या सीमित एआई (Narrow AI):

कमज़ोर एआई एक ऐसी आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस होती है जो सिर्फ किसी एक खास काम को अंजाम देने के लिए बनाई गई हो और वह इससे हटकर किसी और काम को अंजाम नहीं दे सकती। उदाहरणः गूगल सर्च, चेहरा पहचानने वाले ऐप्स, मौजूदा ए.आई. टेक्नोलॉजी जैसे ChatGPT, Nova AI, DeepSeek, अनुवाद सॉफ्टवेयर, खुद–कार गाड़ियाँ दृ ये सब सीमित ए.आई. (Narrow AI) के ख़ाने में आती हैं।

2– मज़बूत या सामान्य एआई (General AI):

सामान्य ए.आई. (General AI) से मुराद वो आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस है जो इंसानों की तरह हर किस्म के ज़ेहनी काम अंजाम देने की सलाहियत रखती हो, जैसेः मुख़्तलिफ़ मसलों को खुद समझकर हल कर सके।

सीखने, सोचने, समझने और फैसला करने की सलाहियत रखे।

नई ज़बानें, महारतें और काम बगैर किसी खास प्रोग्रामिंग के सीख सके।

वज़ाहतः जनरल ए.आई. ऐसी होगी जो आपसे बात कर सके, गणित के सवाल हल करे, शायरी भी लिखे और डॉक्टर की तरह मेडिकल सलाह भी दे कृ और ये सब एक ही निज़ाम में हो।

मौजूदा हालतः फिलहाल दुनिया में जनरल ए.आई. पूरी तरह वजूद में नहीं है मगर OpenAI, Google, DeepMind और दूसरी कंपनियाँ इसकी तरक़्क़ी में मशगूल हैं।

3– सुपर नैचुरल ए.आई. (Super AI):

मज़बूत ए.आई. जिसे (ASI - Artificial Super Intelligence) या Strong Artificial Intelligence भी कहा जाता है, एक ऐसी आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस है जो ना सिर्फ इंसानों की तरह सोचने और समझने की

सलाहियत रखती है बल्कि बाअज़ पहलुओं में इंसानों से ज़्यादा ज़हीन, समझदार और खुद–मुख़्तार होती है।

यह एक नज़रियाती तसव्वुर है, अमली तौर पर अभी मौजूद नहीं। इसका तसव्वुर कुछ फिल्मों में मिलता है, जिसमें बेहतरीन मिसाल (आई, रोबोट) है।

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस कैसे काम करती है?

ए.आई. कई तकनीकी उसूलों पर मुब्नी होती है जिनमें कुछ ये हैं:

1– मशीन लर्निंग (Machine Learning):

मशीन लर्निंग ऐसा तरीका है जिसके ज़रिए कंप्यूटर सिस्टम डेटा से खुद–ब–खुद सीखते हैं और बगैर किसी इंसानी दख़ल के फैसले करने की सलाहियत रखते हैं।

2– डीप लर्निंग (Deep Learning):

इस तकनीक में न्यूरल नेटवर्क्स (Neural Network) की मदद से कंप्यूटर बड़ी मात्रा में डेटा से खुद सीखता है और पेचीदा फैसले लेने के क़ाबिल होता है।

3– नैचरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (Natural Language Processing):

ये तकनीक कंप्यूटर को इंसानी ज़बान को पढ़ने, समझने, अनुवाद करने, खुलासा बनाने और जवाब देने के क़ाबिल बनाती है।

4– कंप्यूटर विज़न (Computer Vision):

कंप्यूटर विज़न ए.आई. का एक विभाग है जिसका मक़सद है कि कंप्यूटर तसावीर और वीडियोज़ को "देख" और "समझ" सके, जैसे इंसान अपनी आंखों से चीजों को पहचानता और समझता है।

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस के फ़ायदे:

1– तेज़ रफ़्तार और दुरुस्त काम:

ए.आई. से वो काम जो इंसान घंटों में करता है, मशीनें चंद सेकंड्स में कर लेती हैं और ग़लती का इम्कान भी कम होता है।

2– तिब्बी मैदान में इंक़लाब:

ए.आई. की मदद से बीमारियों की जल्द तश्ख़ीस, सर्जरी में रोबोट्स का इस्तेमाल और मेडिकल रिपोर्ट्स का तजज़िया मुमकिन हो गया है।

3– तालीम में सहूलत:

ए.आई. आधारित ऑनलाइन तालीमी प्लेटफॉर्म, तलबा की सलाहियतों के मुताबिक़ सीखने में मदद देते हैं जैसे बैंजलळच्च वग़ैरह।

4– कारोबार में खुदकारी (Automation):

फैक्ट्रियों में रोबोट्स मशीनों पर काम कर रहे हैं जिससे पैदावार में इज़ाफ़ा और खर्च में कमी हो रही है।

5– रोज़मर्रा की ज़िंदगी में आसानी:

वॉइस असिस्टेंट्स (जैसे गूगल, सिरी, अलेक्सा), नक्शे (ळचे) और ऑनलाइन ख़रीदारी की सिफ़ारिशें सब ए.आई. ही के करिश्मे हैं।

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस के नुक़सान:

1– रोज़गार में कमी:

ए.आई. की वजह से बहुत से काम जो पहले इंसान करते थे, अब रोबोट्स और मशीनें कर रही हैं, जिससे बेरोज़गारी बढ़ने का ख़तरा है।

2– इंसानी सोच पर इनहिसार में कमी:

जब हर काम मशीन करेगी तो इंसानी तख़लीक़ी और अक़ली सलाहियतें मुतास्सिर हो सकती हैं।

3– प्राइवेसी का ख़तरा:

ए.आई. सिस्टम्स बड़ी मात्रा में डेटा जमा करते हैं जिससे अफ़राद की निजी मालूमात खतरे में पड़ सकती हैं।

4– ग़लत इस्तेमाल का इम्कान:

ए.आई. का इस्तेमाल हथियारों, फ़र्ज़ी वीडियोज़ (कममचमिे) और ग़लत मालूमात फैलाने के लिए भी किया जा सकता है।

5– अख़्लाक़ी और समाजी ख़तरे:

ए.आई. पर मुकम्मल इनहिसार इंसानियत के लिए चौलेंज बन सकता है, जैसे रोबोट्स का ये फैसला करना कि कौन ज़िंदा रहे और कौन नहीं।

नतीजा:

आर्टिफ़िशयल इंटिलिजेंस एक हैरतनाक ईजाद है जो इंसान के लिए बेशुमार सहूलतें पैदा कर रही है। अगर इसे दुरुस्त तरीके और अख़लाक़ी हदों में इस्तेमाल किया जाए तो ये इंसानियत के लिए एक अज़ीम नेमत बन सकती है। वर्ना ये एक चौलेंज भी है। अगर इसका इस्तेमाल ज़िम्मेदारी और अख़लाक़ी उसूलों के बगैर किया गया तो ये फ़ायदे के बजाय नुक़सान का सबब बन सकती है।

हमें चाहिए कि हम ए.आई. को इंसानी फ़लाह के लिए इस्तेमाल करें, ना कि सिर्फ़ मुनाफ़ा या ताक़त हासिल करने के लिए।

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस और खुदशनासी
आईना–ए–नव के रूबरू

डॉक्टर मुफ़्ती मुहम्मद आज़म नदवी

इंसान को अल्लाह तआला ने अशरफुल मख़्लूक़ात बनाया और उसे इल्म, शऊर, फ़हम और खुद–शनासी की वो सलाहियत अता फरमाई जो किसी और मख़्लूक़ को नसीब न हुई। इंसान की असल पहचान उसके रूहानी जौहर, अक़्ल–ए–सलीम और ख़ालिस अब्दियत में मौजूद है।

इर्शाद–ए–बारी तआला है:

وَنَفْسٍ وَمَا سَوّٰىهَا فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوٰىهَا

(सूरह शम्सः 7–8)

यानी अल्लाह ने इंसान को ऐसा नफ़्स अता फरमाया जो नेकी और बदी के शऊर से मुरत्तब है। यही शऊर इंसान की हक़ीक़ी पहचान है जो किसी बाहरी डिजिटल नक़्श या आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस (Artificial Intelligence) से हासिल नहीं हो सकती।

इस्लाम में "मआरिफ़त–उज़–ज़ात" यानी खुद–शनासी सिर्फ एक नफ़सियाती या समाजी (Sociological) इस्तिलाह नहीं, बल्कि एक रूहानी और अख़लाक़ी फ़र्ज़ है, जैसा कि फरमाया गयाः

من عرف نفسه فقد عرف ربه

यानी जिसने अपने आप को पहचाना, उसने अपने रब को पहचाना। यही वो फ़हम है जो हमें हर दौर की नई फ़िक्री यलग़ार के मुकाबले में साबित क़दम रखता है, चाहे उसका ताल्लुक़ साइबर दुनिया से हो या आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस (मसनूई ज़हानत) से।

इस वक़्त दुनिया अपनी साअतों के शोर में एक ऐसी करवट ले चुकी है जहाँ टेक्नोलॉजी सिर्फ सहूलत का सामान नहीं बल्कि शऊर और शनाख़्त की सूरतगरी में एक मरकज़ी किरदार बन चुकी है। इंसान अब किसी दरिया के किनारे बैठकर अपना अक्स देखने वाला मुसाफ़िर नहीं बल्कि एक ऐसी दुनिया में साँस ले रहा है जहाँ आईना भी ऐलगोरिद्म (Algorithm) तय करता है, अक्स भी वही बनाता है और ताबीर का हक़ भी उसी के पास है।

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस अब कोई बेजान ईजाद नहीं बल्कि एक ज़िंदा तहज़ीबी सैलाब की मानिंद है जो इक़दार, रवैयों और खुदी की बुनियाद तक को बहा ले जाने पर तुला हुआ है। इसका सबसे पहला वार इंसान की अपनी शनाख़्त पर हुआ है। अब "मैं कौन हूँ?" का सवाल सिर्फ फ़र्द का ज़ाती मामला नहीं रहा, बल्कि ये सवाल डिजिटल माहौल (Digital Ecosystem) में ही तहलील हो चुका है। अब इंसान के इंटरनेट पर गुज़ारे हुए औक़ात का रिकॉर्ड उसके मिज़ाज और मिज़ाक़ का तअय्युन करता है।

अब हमारी खुदी बे–खुदी में तब्दील हो चुकी है। खुद पर हमारा अपना भी कंट्रोल नहीं रहा बल्कि हम पर इंटरनेट और अब ए.आई. का कंट्रोल बढ़ता जा रहा है। आदमी इज़हार करना नहीं चाहता, वरना सब उस ज़ुल्फ़–ए–गिरहगीर के असीर हैं:

हम हुए, तुम हुए कि 'मीर' हुए
उसकी ज़ुल्फ़ों के सब असीर हुए

नई नस्लें जिन्हें आम तौर पर ळमद ‘ और ळमदमतंजपवद ।सचीं कहा जाता है, उनके लिए ये टेक्नोलॉजी अब रोटी जितनी ज़रूरी हो चुकी है। उनके लिए पहला लम्स (Touch) स्क्रीन का है, पहला मुकालिमा वॉइस असिस्टेंट से है और पहला खेल किसी ऐप के अंदर किसी वर्चुअल दुनिया का। ये वो नस्ल है जो किताबों के सफ़्हों को नहीं, बल्कि स्क्रीन पर आने वाले नोटिफिकेशन को ज़िंदगी की पहली दस्तक समझती है।

ये तब्दीली सिर्फ तर्ज़–ए–हयात की नहीं बल्कि तग़य्युर–ए–ज़ात की है। गुज़िश्ता ज़माने में फर्द की पहचान उसके माहौल, खानदानी पस–ए–मंज़र और तहज़ीबी विरासत से बनती थी, लेकिन आज ये शनाख़्त एक "फिल्टर्ड हक़ीक़त" है जिसे सोशल मीडिया के ऐलगोरिद्म न सिर्फ बनाते हैं बल्कि रोज़ बदलते भी हैं।

अब खुदी की क़द्र किसी दरवेश की सोहबत या मां की दुआ से नहीं बल्कि "लाइक्स" और "व्यूज़" की गिनती से होती है। ये कैसी दुनिया है जहाँ इंसान हर लम्हा दुनिया से जुड़ता जा रहा है मगर खुद से कटता जा रहा है? तन्हाई का ज़हर, ख़ानदान का बिखराव, इज़्तिराब की लहरें और बेचौनी के साये, ये सब इसी हद से बढ़ी हुई ऑनलाइन रहने की आदत (Hyperconnectivity) के ज़ेरे असर पनप रहे हैं। जदीद तहक़ीक़ात हमें बताती हैं कि आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस अगरचे सहूलत की देवी है मगर इसका चेहरा वक़्तन–फ़वक़्तन बेरहम भी हो सकता है।

ऐसे में हमें ठहर कर, झुक कर, अपने बातिन में झाँकने की ज़रूरत है। क्या हम वाक़ई सिर्फ डिजिटल डेटा का मजमूआ हैं? क्या इंसान की पहचान सिर्फ एक वर्चुअल ख़ाका बन कर रह गई है? या अब भी दिल के किसी निहां खाने में वो सदाक़त ज़िंदा है जो अस्लियत की तरफ लौटने की तलब रखती है? इस्लाम इंसान को महज़ जिस्म या डेटा सेट नहीं मानता, बल्कि एक अमानतदार रूह, एक मुकल्लफ़ बंदा और एक ज़िम्मेदार ख़लीफ़ा समझता है। टेक्नोलॉजी चाहे जितनी तरक़्क़ी कर ले, इंसान की इस जामेअ और मानवी शिनाख़्त का कोई बदल नहीं हो सकता। कुरआन हमें तंबीह करता है:

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ

"और उन लोगों जैसे मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उनसे उनका अपना ज़ात का शऊर छीन लिया।" (सूरह हश्रः 19)

यही वो ख़तरा है जो मसनूई ज़हानत की दुनिया में सबसे ज़्यादा बढ़ता जा रहा है कि कहीं इंसान अपने ख़ालिक़ को भूलकर अपने आप से भी ग़ाफ़िल न हो जाए।

बस ज़रूरत इस बात की है कि हम टेक्नॉलॉजी को अल्लाह की नेअमत समझ कर इस्तेमाल करें, मगर अपनी अस्ल पहचान को कुरआन, सुन्नत और रूहानी बसीरत से वाबस्ता रखें। मसनूई ज़हानत की इफ़ादियत से इनकार नहीं, मगर इंसान की हक़ीक़ी पहचान का अस्बात ज़रूरी है। दुनिया बदल रही है, चेहरे बदल रहे हैं, आईने नए हो रहे हैं, मगर अक्स ही धुंधला हो जाए तो शीशा चमकाने से क्या हासिल?

नया आलमी निज़ाम (ग्लोबलाइज़ेशन)

हज़रत मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह0)

"नया आलमी निज़ाम या ग्लोबलाइज़ेशन का इन्क़िलाब आया जिसका ज़ाहिरी मक़सद यह था कि सिसकती–बिलकती दुनिया को क़रार और राहत व सुकून दिलाया जाए, तरक़्क़ी करने वाले मुल्कों की कोशिशों और तआउन से कमज़ोरियों का हल और मरीज़ों का इलाज तलाश किया जाए, लेकिन हुआ इसके उल्टा। इस कोशिश में ऐसे हादसे पेश आए जिसने दुनिया को ख़ुशबख़्ती से बदबख़्ती, राहत व ख़ुशहाली और इस्तक़रार से महरूमी की डगर पर डाल दिया, इन वाक़्यों ने यह साबित कर दिया कि इस निज़ाम का मक़सद दुनिया की आज़ादी देना नहीं बल्कि ख़त्म करना है, इसका अस्ल मक़सद यह है कि आज़ाद मुल्कों को एक ही ज़ंजीर में जकड़ दिया जाए जैसा कि पूर्व अमरीकी सदर के एक बयान से यह ख़तरा सामने आ गया है, इसमें कहा गया:

"अमरीका की आज़ादियां और अमरीका की जम्हूरियत नहीं रह सकती, जब तक कि दूसरी क़ौमों में भी यही इक़दार सरबुलन्द न हो जाएं।"

जिस वक़्त इस दुनिया पर एक मुल्क या दो मुल्क, ताक़तवर साधन व ज़राए के मुमालिक, कुछ दोस्त मुल्कों की क़यादत थोप दी गई, उसी वक़्त से उसने साम्राजी दौर की तरफ़ वापसी का सफ़र शुरू कर दिया।" (नया आलमी निज़ाम और हम: २१७)

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस और फ़िक़्ह–ए–इस्लामी

मोहम्मद नज्मुद्दीन नदवी

इधरचंद माह में हर तरफ़ आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस (ए.आई.) का चर्चा कुछ ज़्यादा हो चला है, मस्नूई ज़हानत जिसे अरबी में "अल–ज़काउल इस्तिनाई" और अंग्रेज़ी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कहा जाता है, लोग रोज़मर्रा के कामों में ए.आई. की मदद से बड़ी आसानी हासिल कर रहे हैं बल्कि इस से आगे बढ़कर इससे दो क़बीलों, ख़ानदानों और क़बाइल के माबैन बरसों से जारी आपसी झगड़ों में फ़ैसला तक कराए जाने की बात सामने आ चुकी है। इल्म–ओ–फ़िक्र और तहक़ीक़ की नई राहें इस के ज़रिये लोग तलाश रहे हैं, सुलगते हुए मसाइल में फ़ौरी रुजू करने का रुझान पाया जा रहा है। बज़ाहिर ये देखने में आ रहा है कि आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस की मालूमात की फ़राहमी, किसी भी शय से वाबस्ता–ओ–ग़ैर वाबस्ता तमाम पहलू को मद्देनज़र रखकर बात पेश करना ये ऐसी बात साबित हुई कि अब निहायत तेज़ी से एआई की मदद से कामों को आसान बनाया जा रहा है. इस में कोई शोबा नहीं कि एआई की आमद से दुनिया में एक नया इंक़लाब और ग़ैर महसूस तरीक़ा पर एक नई तब्दीली आ रही है, फ़िक्र–ओ–अमल और रुझान में तब्दीली आ रही है, इन बातों के बावुजूद हम ये मानने पर आज भी अपने आप को मजबूर पाते हैं कि एआई जितनी और जिस क़दर तरक़्क़ी पाकर औज सुरैय्या को पहुँच जाए मगर इस में इंसानी जज़्बा और फ़िक्र का माद्दा नहीं है, अलबत्ता इस हक़ीक़त का एतराफ़ करना चाहिए कि एआई की जहाँ ख़राबियां और खामियां हैं वहाँ इस के बहुत से फ़ायदों से इनकार नहीं किया जा सकता और इस की ज़हानत को देख कर इंसानी अक़्ल तक कभी हैरान रह जाती है।

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के इस इंक़लाबी दौर में हमें इस सिलसिला में ग़ौर करने की ज़रूरत है कि कहाँ तक मस्नूई ज़हानत से इस्तिफ़ादा किया जाए और किस हद तक इस पर एतमाद किया जा सकता है। इल्म ओ फ़िक्र के किसी भी शोबा में क्या इस पर आँख बंद करके एतमाद और भरोसा किया जाना चाहिए? उलूमे इस्लामिया की तरवीज ओ तालीम और इस्लामी क़ानून ओ शरीयत की तफ़हीम में इस का दायराए कार क्या होना चाहिए? जदीद मसाइल और पेश आमदा वाक़्यात में कहाँ तक इस पर भरोसा करके इस के हल करदा बयानात पर यक़ीन पैदा किया जाए? क्योंकि अब अहले इल्म वा असहाबे इफ़्ता में बहुतों को देखा जा रहा है कि मसाइल के हल में जदीद आलात और आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस का इस्तेमाल बड़ी हद तक बढ़ गया है। शायद इसकी ये वजह हो कि एआई की किसी एक क़िस्म चैट जीपीटी या जेमिनी वग़ैरा से जो भी सवाल किया जाता है, जो आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस का प्रोग्राम इस सवाल का मुरत्तब मवाद पेश करता हुआ जवाब मुदल्लल ओ संजीदा अंदाज़ में जवाब देता है, अंदाज़ तफ़हीम भी निराला होता है, आसान और आम फ़हम होता है। अगर यही सबब और वजह है कि ये हज़रात बहस ओ तहक़ीक़ में और मसाइल ओ अहकाम की तलाश में जदीद आलात ओ वसाइल (एआई) का इस्तेमाल किया और कर रहे हैं तो ये भी नहीं भूलना चाहिए कि इंसानी दिमाग़ आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस का मकरूज़ और सोच ओ समझ और तख़लीक़ी सलाहियतों से आरी रहेगा, मस्नूई ज़हानत के इस्तेमाल के बग़ैर ऐसे अफ़राद कुछ ना कर सकेंगे बल्कि ख़ाली ज़हन और कोताह दस्त होंगे, सिर्फ़ यही नहीं बल्कि इस्लामी उलूम और बिलखुसूस उलूम शरिया (कुरान ओ हदीस और फ़िक़्ह) के मैदान में इस से इस्तिफ़ादा की सूरत में क्या ख़राबियां पेश आ सकती हैं, उन का इदराक पहले हो फिर तदारुक भी हो सके।

जहाँ बहुत से सवालात उभर कर आते हैं वहाँ फ़िक़्हे इस्लामी के हवाला से ये बात भी सोचने और फ़िक्र करने की है कि आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के ज़रिये इल्म हासिल करने की क्या शरई हैसियत हो सकती है? अगर हम ग़ौर ओ फ़िक्र से काम लें तो इस में कोई दो राय नहीं कि ज़माना की तरक़्क़ी को देखते हुए किसी गोशा में

महसूर रहना दानिशमंदी नहीं है, इस्लाम हमें तदब्बुर और ग़ौर ओ फ़िक्र की तलक़ीन करता है और नए आफ़ाक़ ओ अनफुस की राहों की सैर की दावत भी देता है, इस्लाम एक आफ़ाक़ी और वसीअ ओ हमहगीर मज़हब है, हमेशा इस में ज़माना के साथ देने और साथ चलने की पूरी सलाहियत भी है, इस लिए इस में कोई शोबा नहीं होना चाहिए कि बहुत सी जगहों में आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस का इस्तेमाल किया जाना चाहिए, इस सिलसिला में फ़िक़्ही उसूल "अज़्ज़रोरतु तुबीहुल महजूरात" और "अज़्ज़रोरतु तुक़द्दरू बिक़द्दीहा" को पेशे नज़र रख कर खुतबात जुमा और मजालिसे दीनी की तक़रीरों की तैयारी वग़ैरा में इस से भरपूर इस्तिफ़ादा किया जा सकता है, मगर इस के साथ "अल–इसनाद मिनद्दीन" की हक़ीक़त भी अपनी जगह तस्लीमशुदा है, इसलिए उलूम शरिया ओ इस्लामिया के बाब में इस के हासिल करने और दूसरों तक पहुँचाने में एआई के तरीक़ा की हौसला अफ़ज़ाई नहीं की जाएगी, इसलिए कि उलूम दीनिया के हासिल करने का तरीक़ा और उस की तरवीज ओ अशाअत का तरीक़ा सीना बा सीना और उस्ताद ओ शागिर्द की मजालिसत ओ मुसाहबत का है, दीनी तरीक़ा तालीम का एक नबवी निज़ाम है, इस से हटने में ख़ैर से महरूमी भी होगी और फ़हमे दीन की राह में बड़ी ग़लतियों का इम्कान है, इस सूरत में वो खुद गुमराह होगा और दूसरों को भी शरीयत ओ सुन्नत की ग़लत रहनुमाई के ज़रिये गुमराह करेगा।

मुस्लिम मुआशरा में आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस का इस्तेमाल फ़िक़्ह इस्लामी और फ़तवा वग़ैरा के तईं इस्तेमाल के हवाला से है, आया इसका इस्तेमाल किस क़दर और हद तक दुरुस्त है और इस से कहाँ तक इस्तिफ़ादा किया जा सकता है? क्या फ़तवा आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस से दिया जा सकता है या नहीं? आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के इस्तेमाल से हासिल शुदा फ़तवा को वही एतेबार हासिल होगा जैसा दारुलइफ़्ता से जारी किसी फ़तवा को मुसलमानों के नज़दीक मोतबर समझा जाता है। फ़िक़्ह इस्लामी का दायरा बहुत वसीअ है और आए दिन नए नए मसाइल भी पेश आते हैं, फ़िक़्ह के बहुत से मसाइल में मुमकिन है बड़ी हद तक आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस चैलेंज बन जाए मगर ये हक़ीक़त कभी भूलना नहीं चाहिए कि मस्नूई अस्ल की जगह ले नहीं सकता। मस्नूई फूल क्या और कितना ही खूबसूरत हो, बेशक़ीमत हो मगर अस्ल और हक़ीक़ी फूल की जगह नहीं पाएगा, अगरचे मस्नूई फूल की ज़रूरत से किसी को इनकार नहीं.

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस को फ़िक़्ह इस्लामी के तईं बिल कुल्लिया इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। क्योंकि ये खुद एक मस्नूई शय है, इंसानों की तरह सोचने समझने और अस्ल ज़हानत की जगह नहीं ले सकती, जुज़्वी मदद ली जा सकती है, मसलन आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस को सही मालूमात–ओ–मवाद फ़राहम करके आसान–ओ–मोअस्सर ताबीर ओ अंदाज़ इख़्तियार किया जाए।

अगर आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस को इस्तेमाल करते हुए फ़िक़्ह इस्लामी और इफ़्ता में इस्तेमाल किया जाए तो हमारे सामने ये सवाल फिर उभर कर आता है कि क्या मस्नूई शय जवाबदेह है? जवाब इस का साफ़ है कि आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस किसी चीज़ के जवाब देने के बाद जवाबदेह नहीं, इस के बाद एक मुसलमान के लिए मक़ामे फ़िक्र ये है कि फ़िक़्ह और इफ़्ता के अहम मसाइल जिन के जवाब पर अमल करने और ना करने का मदार है और इस पर सवाब और गुनाह का तरत्तुब होता है, इस में अगर जवाब ग़लत आ जाए और आता भी है तो क्या इस पर भरोसा करके दीन ओ आख़िरत का सौदा किया जाएगा? इस मस्नूई शय पर किस चीज़ का हुक्म लगाया जाएगा? इस सिलसिला में आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस की कारकर्दगी वग़ैरा को देख कर बाज़ों ने ये कहा है कि इस पर शरई लिहाज़ से गुलाम का हुक्म लगाया जाएगा, जबकि बाज़ की राय ये सामने आई है कि उसे जानवरों के हुक्म में रखा जाना चाहिए, इस लिहाज़ से इस पर शरई रूह से हुक्म लगाया जाएगा, लेकिन ग़ौर का मक़ाम है कि शरई उमूर का मुकल्लफ़ इंसान को बनाया गया है, मस्नूई शै मुकल्लफ़ कैसे बन सकेगी जब के वो हक़ीक़त में मशीन है।

फ़िक़्ही मैदान में आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के इस्तेमाल में भी वो शरह ओ अहकाम मोतबर होंगे जो किताब ओ सुन्नत और इस्लामी फ़िक़्ही सरमाया में क़र्न अव्वल से आज तक महफ़ूज़ हैं, फ़िक़्ह ओ फ़तवा के मैदान में काम हर किसी के बस की बात नहीं, बड़ी हस्सासियत इस में पाई जाती है, इस लिए क़दीम तर्ज़ यानी नबवी तरीक़ा को ही इख़्तियार करना चाहिए, अगरचे इस के मुफ़ीद पहलुओं से इस्तिफ़ादा के बाब में बिल कुल्लिया एतेराज़ और ऐराज़ दोनों से इंसाफ़ की बात नहीं होगी.

इस्लामी तरबियत और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस

ख़तरे व उपाय

मुहम्मद मुसअब नदवी बाराबंकवी

आज के दौर में आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस (एआई) एक ऐसी टेक्नोलॉजी बन चुकी है जो हमारे रोज़मर्रा के मामूलात में गहरा असर डाल रही है। चंद दशक पहले समाजी साइंसदान मार्शल मकलूहन ने यह तसव्वुर पेश किया था कि दुनिया एक "ग्लोबल विलेज" में तब्दील हो जाएगी जहां फ़ासले और हदूद का कोई मफहूम नहीं रहेगा। आज हम उसी तसव्वुर को हकीकत में देख रहे हैं जहां मोबाइल, इंटरनेट और जदीद डिजिटल मीडिया दुनिया के हर कोने को एक–दूसरे से जोड़ चुके हैं। आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस ने इन तरक्कियों को और ज़्यादा फरोग़ दिया है और काम करने की रफ्तार और आसानी में इज़ाफा किया है।

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस उन मशीनों और सिस्टम्स का मजमूआ है जिन्हें डेटा, अल्गोरिद्म्स और मशीन लर्निंग की मदद से इस काबिल बनाया जाता है कि वह इंसानों की तरह सोच सकें, फ़ैसले कर सके और कुछ मख़सूस पेचीदा काम अंजाम दे सकें। ये मशीनें खुद से सीखने और बेहतर होने की सलाहियत रखती हैं जो उन्हें और भी ज़्यादा मोअस्सर और बाज़ औकात ख़तरनाक बना देती हैं। इन मशीनों को मख़सूस मौज़ू पर मवाद या डेटा दिया जाता है और इस मवाद या डेटा में ममासलत या पैटर्न ढूंढकर ये मशीनें खुद को इस क़ाबिल बनाती हैं कि अगर उन्हें इसी किस्म का मुख़्तलिफ मवाद मिले तो वह उसे पहचान सकें। यह टेक्नोलॉजी हर शोबे में इस्तेमाल हो रही है जैसेः चैट जीपीटी, ग्रोक, ज़हीन रोबोट्स वग़ैरह। आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस के तहत ऐसी–ऐसी टेक्नोलॉजीज रोनुमा हो चुकी हैं जो इंसान की नक़्ल–ओ–हरकत, इंसान की बातें, यहां तक कि इंसानी सोच को भी कवरेज कर रही हैं। इन टेक्नोलॉजीज़ का सफ़र मजीद तरक़्क़ी की तरफ़ गामज़न है।

यह निज़ाम जहां सहूलतें पैदा कर रहा है वहीं बहुत सारे तालीमी, अख़लाक़ी, समाजी ख़तरात व चौलेंजेस को भी बढ़ा रहा है।

उम्मत–ए–मुसलिमा के सामने एआई के चौलेंजेसः इस्लाम दुनिया में अख़लाक़ी तालीम व तरबियत का वाहिद सबसे बड़ा मज़हब है। मज़हब–ए–इस्लाम के पैरोकारों के सामने बड़े चौलेंजेस आ रहे हैं। इस्लाम ग़ौर–ओ–फ़िक्र की, दुरुस्त और पुख़्ता मालूमात की दावत देता है। कुरआन करीम में बार–बार आया हैः "क्या तुम अक़्ल नहीं रखते?"

अब एक तबक़ा तो ग़ौर–ओ–फ़िक्र करके बड़े–बड़े इजादात रोनुमा करता है, मगर वहीं अक्सरियती तबक़ा इन्हीं इजादात पर कुल्ली भरोसा करके गूगल और एआई पर इनहिसार करता है, जो तहक़ीक़, तफ़क्कुर व तदब्बुर की आदत को कम कर देता है। एआई की मदद से तलबा मज़ामीन और मक़ालात लिख रहे हैं जिसकी बुनियाद पर खुद से लिखने और पढ़ने की सलाहियत कमज़ोर हो रही है। मालूमात की फ़ौरी फ़राहमी तो होती है मगर बाज़ मर्तबा गलत या नाक़िस व सतही मालूमात होती है। बाज़ एआई मॉडल्स इस्लामी मौज़ूआत मसलनः जिहाद, शरीअत, खिलाफ़त, पर्दा वग़ैरह पर मन्फ़ी या उनके मुतअल्लिक शक व शुब्हा पैदा करने का काम भी कर रहे हैं। यह इल्मी ख़यानत, इस्लामी इक़दार की अहमियत नौजवानों के दिलों से कम कर सकती है अगर वे इस पर अंधा एतिमाद करेंगे।

इस्लामी तालीमात हया व पाकदामनी को फरोग़ देती हैंः "बेशक वह कामयाब हुआ जिसने अपने नफ़्स को पाक कर लिया।" सोशल मीडिया पर अकसर उरयानी, माद्दा परस्ती, तशद्दुद से भरपूर मवाद होता है जो अख़लाक़ी इन्तिशार और नफ़्स परस्ती को फरोग़ देता है। इस्लाम तालीम देता है अख़लाक़ की, पर्दापोशी की, आज़ादी की। इस्लाम मना करता है किसी की टोह में लगने से, किसी की ग़ीबत से, किसी की आबरूरेज़ी से। अब ज़रा देखें, अकसर माहिरीन स्मार्ट फोंस को जासूसी के आलात से तशबीह देते हैं। जब आप अपना फ़ोन नहीं भी इस्तेमाल कर रहे हों तब भी ये आपकी बातें सुन रहा होता है और उसे आपकी तमाम हरक़ात का इदराक होता है। आपने अक्सर देखा होगा कि अगर आप किसी से सिर्फ़ मुलाक़ात करें तो कुछ देर में सोशल मीडिया पर उसकी आईडी दिखने लगती है या किसी चीज़ का फ़क़्त ज़िक्र कर रहे हों तो वह चीज़ आपके सामने फ़ोन पर आने लगती है। इसी तरह सोशल मीडिया पर ऐसी–ऐसी साइट्स आ गई हैं कि अगर उस पर किसी की तस्वीर डाली जाए तो वह उसकी बरहना तस्वीर बना देगा। बिल्कुल उसी शख़्स की नहीं तो उसी के मुशाबेह।

इस तरह ब्लैकमेलिंग की वारदात सामने आ रही हैं। सोशल मीडिया के ज़रिए किसी को भी ज़लील व रुस्वा करना आसान हो गया है। एक–दूसरे पर नज़र रखी जा रही है। ये सब बातें इस्लामी तरबियत के उसूल से टकराती हैं और भी बहुत सी ऐसी रज़ील आदतों को सोशल मीडिया के ज़रिए फरोग मिल रहा है जिनसे इस्लाम ने मना किया है। ऐसे–ऐसे ऐप्स हैं कि उस पर किसी भी शख़्स की तस्वीर डाल कर उससे जो चाहें कहलवा सकते हो। ये मुस्तक़बिल में बहुत ख़तरनाक साबित हो सकता है। इसके साथ ही एआई के समाज और इन्सानी ज़िन्दगी पर भी ख़तरनाक मनफ़ी (निगेटिव) असरात मुरत्तिब हो रहे हैं।

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस ने बैंकिंग, तालीम, तिब्ब, ज़राअत, निगरानी, अस्करी, दिफ़ा और यहां तक कि मुआशरती ताल्लुक़ात जैसे नाजुक शोबों में भी अपना असर जमा लिया है। आज एक बैंक का कॉल सेंटर हो या फेसबुक पर किसी मॉडल की तस्वीर, हमें पता नहीं होता कि हम किसी इंसान से बात कर रहे हैं या मशीन से। वर्किंग क्लास के लिए एआई के शदीद ख़तरे दरपेश हैं। हाल ही में बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक़, सरमायाकारी बैंक गोल्डमैन साक्स के मुताबिक़ आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस 30 करोड़ मुलाज़मतों की जगह ले सकती है। नवंबर 2022 से अब तक आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के टूल्स में से एक ChatGPT को अब तक कई लाख लोग इस्तेमाल कर चुके हैं और माइक्रोसॉफ्ट ने इस पर अरबों डॉलर खर्च किए हैं। चीन में एआई का इस्तेमाल सोशल कंट्रोल के एक ऐसे ख़तरनाक मॉडल में बदल चुका है जहां हर शहरी की हर हरकत मॉनिटर की जा सकती है। यह निज़ाम जॉर्ज ऑरवेल के नाविल 1984 की अमली तस्वीर बन चुका है जहां इन्फ़रादी आज़ादी, मज़हबी अमल और इज़हार–ए–राए सब हुकूमत की मर्ज़ी के ताबे हैं।

आज जदीद जंगे भी एआई की मदद से तब्दील हो चुकी हैं। इसराईल ने फलस्तीनियों के ख़िलाफ़ एआई प्रोग्राम संअमदकमत का इस्तेमाल करते हुए हज़ारों अवाम को बग़ैर मुक़दमा के निशाना बनाया और ये कहा कि ये लोग भी हमास के साथ हमारे खि़लाफ़ साज़िश में शामिल थे। इस्राईल का ये अमल इंसानी हुकूक़ के खि़लाफ़ संगीन जुर्म है। आने वाला दौर जौहरी हथियार के साथ–साथ एक मुल्क दूसरे मुल्क पर एआई टेक्नोलॉजी के ज़रिए भी अपनी ताक़त का मुज़ाहिरा करेगा। केम्ब्रिज एनालिटिका स्कैंडल ने ये ज़ाहिर किया कि किस तरह सोशल मीडिया के ज़रिए लोगों की राए, फैसले और हत्ता के वोट भी कंट्रोल किए जा सकते हैं। हैकिंग, जाली तस्वीरें, इन जैसे जुर्म आलमी मसअला बनते जा रहे हैं। अगर एआई के अख़लाक़ी उसूल वज़ा न किए गए तो ये समाज शदीद अख़लाक़ी इन्तिशार का शिकार हो सकता है।

आज दुनिया एआई से आगे बढ़कर एजीआई यानी इंसानी सतह की ज़ेहानत की हामिल मशीनें बनाने की कोशिश में लगी हुई है। एजीआई वह मुक़ाम होगा जिसमें मशीनें इंसानों की तरह सोचने की कोशिश करेंगी। यही वह लम्हा होगा जब इंसान के हाथ से कंट्रोल मुकम्मल तौर पर निकल सकता है। इसका ख़दशा खुद एआई माहिरीन जैसे एलन मस्क वग़ैरह बारहा ज़ाहिर कर चुके हैं। हक़ीक़त तो ये है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अक़्ल–ए–इंसानी को जो फ़हम व बसीरत और रूह अता की है वो मशीनें नहीं ले सकतीं। जब फ़हम व बसीरत में वो रूह न होगी तो मशीनें इंसानों का ही नुक़सान पहुंचाने पर तुल जाएंगी। टेक्नोलॉजी की दुनिया में एलन मस्क समेत दीगर अहम शख़्सियात का कहना है कि ताक़तवर एआई सिस्टम्स की तरबियत इंसानियत के लिए ख़तरों के ख़दशात पैदा कर सकते हैं। नामवर साइंटिस्ट स्टीफ़न हॉकिंग इसे "इंसान की तारीख़ी बेवकूफ़ी" कहते थे।

अब सुपर इंटेलिजेंस को एआई की आख़िरी मंज़िल बताया जाता है यानी ऐसी ज़ेहानत जो इंसानों की अक़्ल और फ़ैसला साज़ी को शिकस्त दे दे। ये एक तरह से खुदा के इंकार के बाद मसनूई खुदा बनाने की कोशिश होगी। ये तक़ब्बुर है, ग़ुरूर है, अंजाम वही होगा, तबाही। जो निज़ाम मालिक–ए–कुल, मालिक–ए–मुख़्तार अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के मुक़ाबले पर लाया जाएगा वो दरअसल दज्जाली निज़ाम और दज्जाल का फितना होगा।

ये हक़ीक़त है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता इंसान के लिए एक ग़ैर–मामूली कामयाबी हो सकती है, अगर इसे मुसबत तरीक़ों में बरुए–कार लाया जाए तो ये सेहत और अदवियात के मैदान, तालीमी मैदान, टेक्निकल मैदान में तरक़्क़ी की रफ़्तार को तेज़ कर सकता है। लेकिन इसका इनहिसार अब इंसान पर ही है कि इंसान इस आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस का हाकिम बनता है या महकूम? साथ ही अगर इसका अख़लाक़ी, समाजी, क़ानूनी और मज़हबी पहलू नज़रअंदाज़ कर दिया गया तो यही टेक्नोलॉजी इंसानियत के ज़वाल का बाइस भी बन सकती है। मुस्लिम मुआशरों को चाहिए कि वे न सिर्फ़ एआई की दौड़ में पीछे न रहें बल्कि इसके इस्तेमाल में अपने दीनी व अख़लाक़ी उसूलों को भी मरकज़ी हैसियत दें। एआई को महज़ माद्दी तरक़्क़ी का ज़रिया नहीं बल्कि इंसानी बक़ा का नुक्ता–ए–नज़र समझ कर इसे सही रुख़ देने की कोशिश करें। जहां इल्हादी फ़ित्ने एआई के ज़रिए सरगर्मे अमल हैं वहीं हम दीन–ओ–शरीअत, सही मालूमाती डेटा को इस पर आम करें। अपने बच्चों को सही इस्लामी तरबियत दें और स्मार्ट फोन्स के सही इस्तेमाल की रहनुमाई भी दें।

ढूंढने वाला सितारों की गुज़रगाहों का

मोहम्मद अमीन हसनी नदवी

इंसान को अल्लाह तबारक व तआला ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म की सलाहियतों से नवाज़ा है और इन सलाहियतों से फ़ायदा उठाने में इंसान को इख़्तियार भी दिया है। अलग–अलग तबीयतों और आदतों में इंसान ज़िंदगी गुज़ारता है। कुछ लोग वो होते हैं जो अपनी ज़िंदगी में मगन रहते हैं। वो सुबह उठते हैं, ज़रूरतों से फ़ारिग होने के बाद खाने–कमाने में लग जाते हैं। मुख़्तलिफ़ पेशेवर अपने पेशे के एतबार से अपने–अपने कामों में मशगूल हो जाते हैं। गोया उनकी ज़िंदगी का मशग़ला और मक़सद सिर्फ़ यही है कमाना और खाना। मौजूदा दौर में मग़रिबी तहज़ीब तरक़्क़ी व उरूज की आख़िरी मंज़िल पर है। इसका यही मक़सद है कि इंसान अपनी ज़ाती ज़िंदगी में ऐसा मस्त हो जाए कि उसको बाहर की दुनिया से कोई मतलब न रहे, वो ऐश–ओ–इशरत भरी ज़िंदगी से लुत्फ़ अंदोज़ हो।

इस्लाम ने इस मक़सद को नापसंद किया है और न ही इसकी दावत दी है। इस्लाम ने ज़िंदगी गुज़ारने का एक मुकम्मल ज़ाब्ता दिया है। इस्लाम ने पैदाइश से लेकर मौत तक की जो ज़िंदगी है उसका पूरा लाइहा–ए–अमल बताया है। क़ुरआन मजीद में इसकी तरफ़ कई आयात रहनुमाई करती हैं। इस्लाम ने दुनिया से मुकम्मल इनक़िता (कटाव) का भी हुक्म नहीं दिया और न ही सिर्फ़ मादी (भौतिक) ज़िंदगी गुज़ारने का। इस्लाम ने तवाज़ुन (संतुलन) को इख़्तियार किया। उसने बताया कि कैसे अपने पैदा करने वाले की रज़ा के साथ कोई भी काम किया जाए तो वो इबादत बन जाता है।

मौजूदा दुनिया जिस तरक़्क़ी और कामयाबी को दुनिया के सामने पेश कर रही है, उस तरक़्क़ी पर चलने वाले लोग अपने अंदर बे–सुकूनी और बे–इतमीनानी को महसूस कर रहे हैं। इंसान का दिल अगर ख़राब हो, बातिन की इस्लाह न की जाए, रूहानी तर्बियत से उसको न गुज़ारा जाए और अपने मालिक–ए–हक़ीक़ी से उसका रिश्ता मुनक़तिअ हो जाए तो ये बेचौनी और इज़्तिराब रहेगा ही।

मग़रिब ने तरक़्क़ी की और वो चाँद पर पहुँचा, मुमालिक को फ़तह करता रहा, उसने हर मैदान में कामयाबी हासिल की। इक़्तिसादी और सियासी एतबार से तरक़्क़ी करता रहा, उसने मुख़्तलिफ़ उलूम व फ़ुनून पर महारत हासिल की, कीमिया, केमिस्ट्री, फ़िज़िक्स, साइंस, बायोलॉजी और टेक्नोलॉजी के मैदान में अपना लोहा मनवाया। इल्मी तरक़्क़ी करते–करते वो इतना आगे निकल गया कि अंदर से ख़ाली रह गया। दिलों पर जो मेहनत करनी चाहिए थी, उसने वो नहीं की। बाहरी दुनिया की चमक–दमक में वो इतना खो गया कि अपनी हक़ीक़ी ज़िंदगी को भूल गया। वो अपने आप को न बना पाया। मग़रिब ये समझता रहा कि अस्बाब–ओ–वसाइल के ज़रिए वो दुनिया को फ़तह करेगा, लेकिन वो ये भूल गया कि जब तक दिल की खेती पर मेहनत न की जाए, तो यही अस्बाब व वसाइल ज़िंदगी का सुकून बर्बाद कर देते हैं। ख़ानदानी निज़ाम को तबाह कर देते हैं। दुनिया में ख़ौफ़ का साया होता है। बे–एतिमादी की फ़िज़ा क़ायम होती है। हर मुल्क दूसरे मुल्क से ख़ौफ़ज़दा होता है।

इल्म की तरक़्क़ी जितनी भी हो जाए, अगर खुद इंसान तरक़्क़ी न करे तो यही इल्मे नाफ़े बनने के बजाय ज़र्र बन सकता है और दुनिया आज इसी को देख रही है। इंसानी दिमाग़ों ने तरक़्क़ी की, कारख़ाने तरक़्क़ी करते रहे, मशीनरी निज़ाम ने भी तरक़्क़ी की लेकिन दिल आज भी बीमार है, दिल अंधेरे में है, दिल की दुनिया में रोशनी नहीं, क्योंकि उस पर कोई मेहनत नहीं की गई। उसको पाक व साफ़ नहीं किया गया। क़ुरआन मजीद ने नबूवत के चार बुनियादी मक़ासिद बयान किए हैं, उनमें से एक तज़किया–ए–नफ़्स भी है:

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ
وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ

"वही ज़ात है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उनकी सामने अल्लाह की आयतें पढ़ कर सुनाता है, और उनका तज़किया करता है, और उन्हें किताब और हिक्मत सिखाता है।" (सूरह अल–जुमाः 2)

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0) 1977 में अमेरिका गए। तक़रीबन 50 साल क़ब्ल मौलाना ने वहाँ की तहज़ीब, वहाँ के तमद्दुन को देखा और उससे क्या नतीजा अख़्ज़ किया, खुद उन्हीं की ज़बानी सुनिएः

"मग़रिबी तहज़ीब तेज़ी से ज़वाल की तरफ़ जा रही है। वजह ये है कि यहाँ ख़ानदानी निज़ाम में अब्तरी पैदा हो गई है। ख़ानदानी निज़ाम टूट रहा है। शौहर और बीवी में जो एतिमाद और मोहब्बत होनी चाहिए, रोज़–ब–रोज़ उसमें कमी आ रही है। यहाँ के मुफ़क्किर और फ़िलासफ़र इस सूरत–ए–हाल से परेशान हैं। किताबें लिखी जा रही हैं, सर्वे पर सर्वे हो रहे हैं और इस पर ग़ौर किया जा रहा है कि मग़रिब के मुआशरती निज़ाम को टूटने और बिखरने से कैसे बचाया जाए। यहाँ सब कुछ है, वसाइल का क़दमों पर ढेर लग गया है। कायनात की बहुत सी ताक़तों को उन्होंने मुसख़्ख़र कर लिया है लेकिन अपने दिल की दुनिया को उन्होंने उजाड़ दिया है और अपने घर की जन्नत को उन्होंने जहन्नम बना दिया है।"

मौजूदा तहज़ीब–याफ़्ता क़ौमें और मुतमद्दिन मुमालिक की अपनी ज़िंदगी अगरचे खूब दीदा ज़ेब है, ऐश व आराम के ज़राए से मालामाल है, लेकिन चौन व सुकून की दुनिया से कोसों दूर हैं। वहाँ के लोग घुटन और ज़ेहनी कशमकश से दो–चार हैं। ज़ेहनी मर्ज़ में मुबतला हैं। आसाबी तवाज़ुन खो चुके हैं। अंदर का सुकून और ख़ुशी से बे–बहरा हैं। इसी वजह से अकसर खुदकुशी का सहारा लेते हैं। इसके अलावा अख़लाक़ी जुर्म, कत्ल–ओ–ग़ारतगिरी और दहशतगर्दी के वाक़्यात में रोज़–बरोज़ इज़ाफ़ा हो रहा है।

मौलाना मोहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह. एक जगह लिखते हैंः

"आज दुनिया की मुश्किलें और इसके मसाइल बड़े पेंचीदा और संगीन हैं। इस इंसानी शऊर और बेदारी के फ़ुक़दान की बुनियाद पर वो ख़तरनाक रुख़ पर जा रहे हैं। यक़ीनन इंसान ने ऐसे वसाइल ईजाद कर लिए हैं जिनके ज़रिए वो पूरी दुनिया से बाख़बर हो सकता है और पूरी दुनिया को अपनी निगाहों की गिरफ़्त में ले सकता है, लेकिन उसके अंदर से क़ल्बी शऊर और बसीरत ख़त्म हो चुकी है। चुनांचे वो अपनी ख़िल्क़त, लिबास और रिहाइश के तर्ज़ की वजह से ब–ज़ाहिर इंसान है, लेकिन अपने ख़यालात, मैलानात और तबीअत व रुजहान के एतबार से वहशी है। ये सिर्फ़ इस बुनियाद पर है कि उसने खुदा की हिदायत, रोशनी और अख़लाक़ी तर्बियत को गँवा दिया है, जिसके नतीजे में वो अपनी साइंसी ईजादात और तकनीकी वसाइल के बावजूद दुनिया को जहन्नम बनाए हुए है।"

इक़बाल ने सच ही कहा थाः

ढूँढने वाला सितारों की गुज़रगाहों का
अपने अफ़कार की दुनिया में सफ़र कर न सका!

इस्लाम एक मुकम्मल निज़ामे ज़िन्दगी

"इस मुल्क की नहीं बल्कि इन्सानियत की यह बदक़िस्मती है कि इस मुल्क ने तन्हा माद्दी मैदान में फ़तेह हासिल की और इसमें रिकार्ड क़ायम कर दिया। उसने ज़मीन को गुलज़ार लालाज़ार बना दिया। बड़ी ख़ुशक़िस्मती की बात होती और दुनिया की तारीख़ कुछ और होती, अगर ज़मीन के इस ख़ित्ते को सही रहनुमाई हासिल होती और इसको दीने सही की नेमत मिली होती और जिस तरह इसने माद्दियात की तरफ़ तवज्जो की, अख़्लाक़ियात की तरफ़ तवज्जो करता और जिस तरह उसने आसमान में ख़ुदा की निशानियां देखी हैं और "अनक़रीब हम उन्हें अपनी निशानियां आफ़ाक़ में दिखाएंगे" पर अमल किया है, वैसे ही "अन्फ़ुस" ख़ुदा के पैदा किये हुए दिल, अता की हुई रूह और लतीफ़ एहसासों में ख़ुदा की निशानियां देखता और दुनिया को दिखाता।"

(नई दुनिया अमरीका में साफ़–साफ़ बातें: ३८)

मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

दीन की दावत और नवीन मीडिया

अब्दुल अली हसनी नदवी

नवीन साइंसी इल्म–व–टेक्नोलॉजी पिछली चंद सदियों से मुसलसल तरक़्क़ी की राह पर गामज़न है। नित नए साइंसी नज़रियात व ख़्यालात और नई–नई मॉडर्न ईजादात व चीज़ें मुसलसल मंज़रे आम पर आ रही हैं, हर लम्हा एक नई दरियाफ़्त और एक नया इनकिशाफ़ मंज़र–ए–आम पर आ रहा है। नए नए तजुर्बे मुस्तक़लि जारी–सारी हैं। बहस व तहक़ीक़ के मुख़्तलिफ़ ज़ावियों की परतें रफ़्ता रफ़्ता खुलती जा रही हैं और गोया इंसान अपनी तमाम अक़्ली तवानाई और ख़िरद मंदी सामान–ए–आसाइश की अफ़ज़ूनी और माद्दी ओ तरक़्क़ियाती मंसूबों की तकमील में बरुए कार ला रहा है और रब्बे ज़ुलजलाल की अता से ऐसे मुहय्यिरुल उक़ूल आलात–वसाइल ईजाद कर रहा है कि पिछलों के लिए जिस का तसव्वुर भी मुहाल था। चुनाँचे अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि तीन सौ साल क़ब्ल का कोई शख़्स मौजूदा दुनिया में आ निकले और चश्म–ए–ज़दन में फ़िज़ा में कौंधती परवाज़ों, चाँद पर कमंदें डालते रॉकेटों, समुंदर की अथाह गहराइयों में तैरते आब दोज़ों, सड़कों पर दौड़ती बर्क़ रफ़्तार गाड़ियों और आसमान को चूमती लक़–ओ–दक़ और बुलंद–ओ–बाला इमारतों और अलबेले मुवासलाती निज़ाम का मुशाहिदा कर ले तो यक़ीनन वो इस अलिफ़ लैलवी दुनिया के सामने ना सिर्फ़ दांतों तले उंगली दबाना हो जाएगा बल्कि बहुत मुमकिन है कि मारे हवास बाख़्तगी के वो ताब–ए–तहम्मुल ही खो बैठे।

अलग़रज़ ये एक नाक़ाबिले इनकार–ओ–तरदीद हक़ीक़त है कि गुज़श्ता चंद सदियों में, ख़ास तौर से इंक़लिाबे फ्रांस के बाद दुनिया ने जदीद साइंसी तरक़्क़ी–ओ–टेक्नोलॉजी के बाब में जो इंक़लिाब आफ़रीं कारहा–ए–नुमायां अंजाम दिए हैं और हर छोटे बड़े शोबाहाए ज़िंदगी में जिस तरह हैरतअंगेज़ असबाब–ओ–वसाइल की फ़रावानी हुई है, वो बिलाशुबा अक़्ले इंसानी की अनथक कोशिशों का ज़हूर और उन ख़्वाबिदा सलाहियतों की नुमूद है जिस के लिए बनी नो इंसान हमेशा से सरगरदाँ रहा है। इस सिलसिला की जोहदे मुसलसल और अमल–ए–पैहम की सबसे अहम और सुनहरी कड़ी क़ुरून–ए–वुस्ता का वो इस्लामी अहदे ज़र्रीं है जिस ने ना सिर्फ़ साइंसी उलूम के फ़रोग़ में मेन रोल अदा किया बल्कि अपनी अनोखी दरियाफ़्तों और मुस्तहकम नज़रियात से इस मैदान में ऐसे अनमिट नुक़ूश सब्ज़ किए और ऐसी बुनियादें उस्तवार कीं कि जिस पर आज की मॉडर्न दुनिया और जदीद साइंस–ओ–टेक्नोलॉजी क़ायम है। अलबत्ता मुझे ये भी कहने में ज़र्रा बराबर ताम्मुल नहीं कि माद्दी असबाब–ओ–वसाइल ओ ईजादात में अहले मग़रिब गुज़िश्ता बरसों हम से कहीं आगे निकल चुके हैं, लेकिन एक तल्ख़ हक़ीक़त ये भी है कि मालूम इंसानी तारीख़ में माद्दा–ओ–रूह कभी ऐसी ख़ूनी कशमकश से दो चार हुए हों और वसाइल–ओ–मक़ासिद इस क़दर अदमे तवाज़ुन का शिकार हुए हों और किसी भी दौर में ज़िंदगी के इन दो उन्सरों के दरमियान ऐसी सख़्त रस्साकशी और बाहम कशाकशी हुई हो और अला रुऊसिल अशहाद ज़िंदगी की अहम तरीन हक़ीक़त (रुहानियत) के ताने बाने बिखेर कर उसे पस–ए–पुश्त बल्कि पस–ए–कलीसा–ओ–मअबद डाल दिया गया हो।

बहरेकैफ़! तमाम दुखड़े एक तरफ़, वाक़्या ये है कि अब इन ही जदीद ईजादात में एक नुमायाँ मुक़ाम इंटरनेट और जदीद ज़राए अब्लाग़ (मीडिया) को भी हासिल है जिस की अहमियत मानो कि तस्लीम शुदा है, अलबत्ता इसके बेदरेग़ और बेहंगम इस्तेमाल ने समाजी ताल्लुक़ात और इज़हार–ए–जज़्बात के नफ़ीस और शाइस्ता अतवार को तार–तार कर रखा है और ये प्लेटफ़ॉर्म बेढंगी और गुंजलक आवाज़ों की आमाजगह बन चुका है। इस पर गो कि बाज़ सलीक़ा शेआर अहले इल्म और तहज़ीब याफ़्ता अहले दानिश भी जलवा अफ़रोज़ हैं लेकिन दूसरी तरफ़ शैतान के चेलों और बातिल के हरकारों का इज़दहाम भी मचा हुआ है लेकिन तमाम नुक़ाइस ओ मुज़र्रात के बावजूद ये एतराफ़ भी ना गुज़ीर है कि जदीद ज़राए अबलाग़, ख़ास तौर से मस्नूई ज़हानत

(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) असरे हाज़िर की वो अज़ीम कुव्वत है कि जिस के बलबूते पर हर हमा शुमा और कस ओ नाकस ज़माना के सियाह–ओ–सफ़ेद पर मुसबत या मनफ़ी असर डाल रहा है। सियासत, मुआशरत, मज़हब, तालीम, कारोबार समेत ज़िंदगी का कोई शोबा तिश्ना नहीं कि जिस पर ये वसाइल असरअंदाज़ ना हो रहे हों।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रीज़ा–ए–दावत–ए–दीन की अंजामदेही के लिए हमारे सामने ज़मान–ओ–मकान की ला महदूद वुसअतें रखी हैं और शरई हुदूद–ओ–क़ुयूद में ज़मान ओ मकान के तग़य्युर, गिर्द–ओ–पेश के हालात–ओ–तबियत के मुताबिक़ मनाहिजे दावत को लचकदार बनाया है और इस कार–ए–अज़ीम को बेलोच क़वानीन ओ ज़वाबित की बंदिशों से आज़ाद करके एक वसीअ–ओ–अरीज़ हिसार में महफ़ूज़ फ़रमा दिया है, जिस का बराह–ए–रास्त तअल्लुक़ दाई के अंदाज़े सुख़न और खुलूस–ए–नियत से है। चुनाँचे इरशाद–ए–रब्बानी है:

ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَجَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

"ऐ पैग़ंबर! अपने रब के रास्ते की तरफ़ बुलाओ हिकमत ओ दानिश और अच्छी नसीहत के साथ और अच्छे तरीक़ा पर उन से बहस कीजिए, बिलाशुबा आप का रब खूब जानता है कि कौन उस के रास्ता से भटक गया और वो सही रास्ता चलने वालों को भी खूब जानता है।" (अन्नहल: 125)

ऊपर ज़िक्र की गई आयत से वाज़ेह हो जाता है कि सिवाए अंदाज़–ए–बयान इख़्लास–ए–निय्यत और मुक़्तज़ा–ए–हिक्मत ओ हाल के दाई को इख़्तियार है कि वो अपनी सवाब दीद, दानिश मंदी और हाज़िर जवाबी से दावत–ए–दीन की ज़िम्मेदारी अदा करता रहे, चुनाँचे जब कि जदीद ज़रीया–ए–इब्लाग़–ओ–नश्र ओ–इशाअत बशमूल इंटरनेट और इस के ज़ैली प्लेटफ़ॉर्म्स के पैग़ाम रसानी, तबादला–ए–ख़याल और मालूमात के इश्तिराक का सब से दूर रस और मोअस्सर तरीन तरीक़ा बन चुका है और ये सहूलत किसी ख़ास तबक़ा की जागीर भी नहीं बल्कि हर शख़्स आज़ादाना इसका इस्तेमाल कर सकता है और कर रहा है, दाश्वत–ए–दीन से मुंसलिक अफ़राद की अव्वलीन ज़िम्मेदारी है कि वो इन ज़राए में घोले जा रहे ज़हर–ए–हलाहल का तिरयाक़ बनें और कुफ़्र ओ ज़लालत में मदहोश इंसानों को ईमान–ए–हक़ीक़ी का जाम पिलाएं क्यूंके अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि:

لأن يهدى الله بك رجلا واحدا خير لك من حمر النعم

"अल्लाह की क़सम! अगर एक आदमी भी तुम्हारे ज़रीआ राह–ए–हिदायत पा जाए, ये चीज़ तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊँट से बेहतर है।" (जारी)

दाई, दावत और दावत का तरीक़ा

सैय्युत्ताईफ़ा अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह०)

"उम्मते मुहम्मदिया के मिज़ाज के मुताबिक़ यह ज़रूरी है कि दाई, दावत और दावत का तरीक़ा तीनों ठीक-ठीक नबवी तरीक़े और नबवी नमूने के मुताबिक़ हों। दाई ख़ुद भी क़ल्बन और क़ालिबन (अन्दरून व ज़ाहिर) दाई–ए–अव्वल मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स०अ०व०) से निस्बत रखता हो। जिस हद तक यह निस्बत मज़बूत होगी, दावत में तासीर और कशिश पैदा होगी, फिर ज़रूरी है कि दावत वही हो यानि ख़ालिस इस्लाम और अमले सालेह (नेक कामों) की दावत हो, फिर दावत का तरीक़ा भी वही अख़्तियार किया जाए जो दाई–ए–इस्लाम (अलैहिस्सलात–वस–सलाम) ने अख़्तियार फ़रमाया था। जिस हद तक इन तीनों कामों में अहदे रिसालत व नुबूव्वत के साथ क़ुर्ब–ओ–मुनासिबत जितनी ज़्यादा होगी, उतनी ही ज़्यादा दावत की कूव्वत में तासीर और दावत के दायरे में वुसअत पैदा होगी और राह की ज़लालत से हिफ़ाज़त और सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ रहबरी की ताक़त में इज़ाफ़ा होगा।"

(हज़रत मौलाना मुहम्मद इलियास और उनकी दीनी दावत: १४)

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस
तजज़िया, अंदेशे और मश्वरे

मुहम्मद अरमग़ान बदायूनी नदवी

इस तेज़ रफ़्तार दौर में हर नामुमकिन चीज़ मुमकिन बनती नज़र आ रही है। मुश्किल से मुश्किलतरीन काम चुटकियों में अंजाम पा रहे हैं। महीनों का काम दिनों में और दिनों का काम घंटों में और घंटों का काम मिनटों और सेकंडों में बख़ूबी हो रहा है। मशीनों की तरक़्क़ी और टेक्नोलॉजी इस हद तक पहुँच चुकी है कि अब हर शख़्स ग़ैर मामूली ताक़त से लैस है। शायद आज से हज़ार साल पहले हज़रत सुलेमान (अलैहिस्सलाम) के उस जिन्न का वाक़्या इस क़दर समझ में न आता जिसने दावा किया था कि मैं पलक झपकने से पहले तख़्त–ए–बिल्क़ीस को ले आऊँगा। वाक़्या ये है कि आज एक क्लिक में इंसान सात समंदर पार की ख़बर रखने पर क़ादिर हो चुका है और उसके लिए इन सब बातों का समझना बिलकुल भी दुश्वार नहीं रह गया है।

इसमें शुब्हा नहीं कि यूरोप के सिनअती, फ़िक्री और साइंसी इन्क़िलाब से पूरी दुनिया मुतास्सिर हुई और मुस्तफ़ीद भी। आज उसकी ईजादात व इन्किशाफ़ात, उसके तजुर्बों और साइंसी उलूम से एक आलम फ़ायदा उठा रहा है। हाल ये है कि आज इंसान अपनी ज़िंदगी की बुनियादी ज़रूरतों को मुकम्मल करने में भी यूरोप का मोहताज बन गया है और इसका सबब ये है कि उसने हर सतह पर अपनी नाफ़ेईयत को तस्लीम कराने की भरपूर कोशिश की है।

आँखों को ख़ीरा करने वाली यूरोप की ये तेज़ रफ़्तार तरक़्क़ी यक़ीनन एक बड़ा कारनामा है लेकिन इससे इंसानी मुआशरा के तमाम जज़्बात और तक़ाज़ों की तक्मील नहीं होती। ईजादात की कसरत, मसनूआत की बहुतायत, साइंसी तरक़्क़ी और नई नई मशीनों की दरयाफ़्त, यहाँ तक कि इंसान के मुतवाज़ी इंसान नुमा एक मशीन (Robot) बना कर खड़ा कर देना। साइंसी दुनिया में यक़ीनन एक अक़्ल को हैरान करने वाली बात हो सकती है लेकिन इन चीज़ों से उस इंसानी ज़मीर की इस्लाह मुमकिन नहीं जिसका सही व सलीम होना एक ज़िंदा मुआशरा की दलील होता है। इसमें क्या शुबहा है कि आज यूरोप तमाम माद्दी ज़ख़ीरों व वसाइल से मालामाल है और टेक्नोलॉजी के मैदान में उसको एक इम्तियाज़ हासिल है, लेकिन इसके बावजूद वहाँ ऐसे आला इंसानी समाज का फ़ुक़्दान है जिसके दिल में इंसानियत का दर्द हो, जिसके पहलू में धड़कने वाला और रहम खाने वाला दिल हो और वह मशीनी ज़िंदगी के साए तले इंसानी ज़िंदगी गुज़ारने पर पूरी तरह क़ुदरत रखता हो।

मशीनों की बहार के इस ज़माने में जिसकी बेरहम मौजें यूरोप ही से उठती हैं, "मसनूई ज़हानत" (आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस) ने आलमी सतह पर एक तुग़यानी बरपा कर रखी है। बिलाशुबहा ये पूरी इंसानियत के लिए एक बड़ी आज़माइश है। एक तरफ़ ये कामों को आसान करने का मुफ़ीद व मुअस्सर ज़रिया है और दूसरी तरफ़ इंसानी ज़हानत को जमूद व ठहराव का शिकार करने वाला भी, सबसे बढ़कर नस्ल–ए–नौ के लिए ये एक बड़ा चौलेंज है।

अगर आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के फ़वाइद व नुक़्सानात का तक़ाबुली मुताला किया जाए तो साफ़ अंदाज़ा होता है कि:

"और उनका गुनाह उनके नफ़ा से बढ़कर है।"

हालिया तहक़ीक़ात और नई रिपोर्ट्स के मुताबिक़ ये मालूम होता है कि आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस नई नस्ल की ज़हनी सेहत को बहुत ज़्यादा मुतास्सिर कर रही है और रोज़–बरोज़ उनके अंदर नए नए नफ़्सियाती मसाइल पैदा हो रहे हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक़ इसी आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस का इस्तेमाल करने के सबब तक़रीबन छप्पन फ़ीसद नौजवान Mental Burnout की बीमारी का शिकार हैं।

न्यूयॉर्क की Cornell University की एक तहक़ीक़ी रिपोर्ट में है कि आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के इस्तेमाल के सबब तलबा की तख़लीक़ी सलाहियतों में ग़ैरमामूली कमी देखने में आई है, आख़िर में ये हिदायत भी दर्ज है कि उस्ताद को चाहिए कि वो तलबा को हद से ज़्यादा एआई

इस्तेमाल करने पर उसके ख़तरात से आगाह करें। मुआशरती रवाबित और इंसानी हमआहंगी के जज़्बे को भी आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस ने बहुत मुतास्सिर किया है, फ़ितरी और तबई तक़ाज़ा तो ये है कि अगर इंसान किसी मुसीबत या परेशानी में गिरफ़्तार है या वो किसी ज़हनी अज़ीयत से दो–चार है तो वह अपने किसी मुख़्लिस के पास बैठकर मसले का हल तलाश करे और सुकून के दो पल गुज़ारे, मगर अब ये बात भी देखने में आ रही है कि ज़्यादातर नौजवान यहाँ तक कि नौ–उम्र बच्चे भी सोशल रवाबित और इंसानी तआमुल से ज़्यादा अहमियत आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस से राब्ता क़ायम करने को देते हैं। मारूफ़ सहाफ़ी Jocelyn Gecker ने अपनी एक तहक़ीक़ में बताया है कि आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस हैरतअंगेज़ सुरअत से इंसानी ताल्लुक़ात की जगह हासिल कर रही है। हत्ता कि संगीन मसाइल में भी लोग इसी को अपना मुशीर समझते हैं।

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस ने सबसे बढ़कर अख़लाक़ी पहलू को जिस तरह तार–तार किया है और फ़हहाशी का बाज़ार जिस तरह सरगर्म हुआ है, शायद इससे पहले ये तसव्वुर भी नामुमकिन था। इसके ज़रिए झूठ को इस तरह फैलाया जाता है कि वह बिल्कुल सच मालूम हो और सबसे बढ़कर इसके ज़रिए वह हया सोज़ और फ़ुहश वीडियोज़ भी बनाए जा रहे हैं जिनको देखकर नौजवान नस्ल का मुस्तक़बिल बर्बाद होना यक़ीनी है। न्छमैब्ब की एक रिपोर्ट के मुताबिक़ इस वक़्त आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस से बनने वाली फ़ुहश वीडियोज़ का सबसे ज़्यादा निशाना वह बच्चे हैं जिनकी उम्रें 18 साल से कम हैं।

आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के इस सैलाब–ए–बलाख़ेज़ का एक मनफ़ी तास्सुर ये भी देखने में आया है कि अब आदमी को न किसी मुशीर की ज़रूरत है न उस्ताद की, न किसी मुरब्बी की हाजत है और न किसी मुर्शिद की बल्कि वह बंद कमरे में अपनी तमाम ज़रूरियात की तक्मील आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस ही से कर रहा है। ख़तरा है कि कहीं आइंदा नस्ल मशीनी फ़हम व फ़रास्त ही की नज़र न हो जाए।

इसमें शुब्हा नहीं कि आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस ने इंसानी समाज में अपनी नाफ़ेईयत का ग़ैर मामूली सुबूत पेश किया है और हर हल्क़ा में यकसाँ तौर पर उसकी मक़्बूलियत बढ़ रही है बल्कि वह अब हर इंसान की एक ज़रूरत बनती जा रही है लेकिन ये भी हक़ीक़त है कि उसने बड़े पैमाने पर इंसानों को रोज़गार से भी महरूम किया है। किसी कहने वाले ने बड़ी हकीमाना बात कही थी कि इंसानी समाज बाहम एक दूसरे के तआवुन से चलता और तरक़्क़ी करता है मगर वाक़्या ये है कि आज का इंसान, इंसान से काम लेने के बजाए मशीन और आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस से काम लेना ज़्यादा आसान समझता है। इसलिए कि वह एक लगे बंधे मामूल की पाबंद है, न उसके पास जज़्बात हैं और न ही तक़ाज़े, हद तो ये है कि अब जंगों के लिए भी A.I. Weapons बनाए जा रहे हैं।

अगर ग़ौर किया जाए तो इंसानियत के हक़ में आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस को मुसीबत व राहत बनाना, ये ख़ुद इंसान की अपनी सलाहियतों पर मौक़ूफ़ है। लोगों की अक्सरियत ने जिस ने तरह अभी अपनी तख़्लीक़ी सलाहियतों को इसी आर्टिफ़िशियल इंटिलिजेंस के रहम व करम पर छोड़ दिया है। हत्ता कि वह इसके हुस्न व क़ुबह में तमीज़ करने से भी क़ासिर हैं। अगर यही सूरत–ए–हाल बढ़ती रही और इसके बजाए अक़्ल व फ़हम, हिकमत व तदब्बुर और इंसानी उलूम व तजुर्बा को अस्ल मेयार न बनाया गया तो इस बात का बहुत अंदेशा है कि आइंदा आने वाली नस्ल सौ फ़ीसद मशीनों की ग़ुलाम होगी। इल्म व हिकमत और दानाई से बेबहरा होगी। एहसासात व जज़्बात से आरी होगी। मज़हब बेज़ार व बदअख़्लाक़ होगी और इंसानी शुऊर और सोज़–ए–दरूँ से बिलकुल नाआश्ना होगी। न उसके अंदर बड़ों की तौक़ीर का जज़्बा होगा और न ही वह एक बामक़सद ज़िंदगी गुज़ारने के लाइहा–ए–अमल से वाक़िफ़ होगी। सही मायनों में एक जामिद मशीन के पहलू–ब–पहलू एक ज़िंदा व जावेद और चलती फिरती मशीन होगी। क़ुरआन ने सच कहा है कि: "लोगों के हाथों की कमाई (करतूतों का नतीजा) है कि ख़ुश्की और तरी में बिगाड़ फैल गया है।"

ज़रूरत है कि इस तेज़ रफ़्तार दुनिया को सही सिम्त अता की जाए। इसको इंसानियत के हक़ में बाइस–ए–रहमत बनाने की कोशिश की जाए। इसका ग़ुलाम बनने के बजाए, इसको अपना ताबे व ग़ुलाम बनाया जाए। बेहतर मक़ासिद में इसका इस्तेमाल किया जाए। इसके नुक़सान से चौकन्ना रहा जाए और सबसे बढ़कर इसके मुक़ाबले में अपनी वह ला महदूद तख़्लीक़ी सलाहियतें हरगिज़ न ज़ाया की जाएँ जिनसे हमारे ख़ालिक़ ने हमें नवाज़ा है। हमारी अस्ल कामयाबी इंसानों को इंसान बनाने में है, न कि इंसानों को मशीन बनाने या मशीन जैसा बन जाने में।

ताक़त व असर के वसाएल पर क़ाबू पाने की ज़रूरत

मग़रिब को जिन वसाइल पर ज़्यादा क़ाबू हासिल है, मश्रिक़ी हुकूमतें इस वक़्त इस सिलसिला में बिल्कुल नाकारा साबित हो रही हैं और बज़ाहिर अभी जल्दी वो इस पर क़ाबू न पा सकेंगी। इसमें मुस्लिम आवाम अपने जज़्बा–ओ–हिम्मत और ग़ैरत–ए–दीनी के असर से कुछ कर सकें तो वो अलग बात है, लेकिन इस का बहुत ज़्यादा नतीजा खेज़ होना दुश्वारी रखता है। अलबत्ता "तालीम" और "इब्लाग़" ऐसा ज़रिया है कि इसमें तालीम–याफ़्ता मुसलमान अपनी कमज़ोरी को दूर करना चाहें, तफ़व्वुक़ पैदा करना चाहें तो ये ज़्यादा दुश्वार नहीं है। ज़रूरत इस बात की है कि हम इल्मी व फ़िक्री मैदान में तफ़व्वुक़ पैदा करें और इसकी सलाहियत आवाम में आम करें जिस के ज़रिए हम ताक़त–ओ–असर के बहुत से वसाइल पर क़ाबू पा सकेंगे, अपने मुख़ालिफ़ीन की राय पर असर अंदाज़ हो सकेंगे और इस्लाम के पैग़ाम और इस की इंसानियत–नवाज़ी व हक़–परस्ती को उन के ज़ेहन में बिठा सकेंगे और इस तरह हम अगर अपने मुख़ालिफ़ीन के दानिशवर तबक़ा को मुतास्सिर कर सकेंगे तो ये हमारी बहुत बड़ी जीत होगी क्योंकि क़ौमों और मुल्कों की क़यादत दानिशवर तबक़ा ही करता है और उस के साथ इब्लाग़ी वसाइल को हम अपने क़ाबू में ला सकें या मुतवाज़ी ज़राए–इब्लाग़ जो आलमी सतह पर असर डाल सकता हो, उस में इम्तियाज़ पैदा कर सकें तो हमारे दुश्मनों की तरफ़ से हक़ाएक़ को मस्ख़ करने और मुसलमानों के चेहरा को बिगाड़ने की जो साज़िश बड़े पैमाना पर चल रही है, इस साज़िश को हम नाकाम बना सकते हैं। इस तरीक़ा से हमें राय–ए–आम्मा को मौजूदा दौर में बड़ी जज़्बातियत से बुलंद हो कर हिकमत के साथ वसीअ तरीक़ा से अपनाना होगा और अफ़सोस की बात ये है कि इस में बड़ी कोताही हुई है और इस कोताही का सिलसिला जारी है और हम इस कोताही को दूर करने की तरफ़ वैसी तवज्जो नहीं दे रहे हैं जैसी देना चाहिए थी। इसलिए हम को इस तरफ़ ख़ुसूसी तवज्जो करना है।

मौजूदा सदी में हमारी अज़मत का इन्हिसार इसी पर है कि हम उन वसाइल–ए–क़ुव्वत–ओ–असर को इख़्तियार करें जिनसे मग़रिब ने मश्रिक़ी क़ौमों को ग़ुलाम बनाया है और इल्म–ओ–तालीम, ज़राए–इब्लाग़ और वक़्त के मुताबिक़ हिकमत–ए–अमली और उस के साथ बल्कि उससे भी ज़्यादा आला इस्लामी हौसला और किरदार इख़्तियार करें, जिन से आरास्ता होने पर अव्वलीन इस्लामी अहद की आला तरीन मिसाल और दुनिया की क़ौमों के मुक़ाबला में सबसे बुलंद–ओ–बाला अहद था। अल्लाह तआला हम को इन बातों की सही तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।"

(आलमे इस्लाम और साम्राजी निज़ाम: ३६–३८)

मुर्शिदुल उम्मत हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (रह0)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 8 ❄ August 2025 ❄ Volume: 17

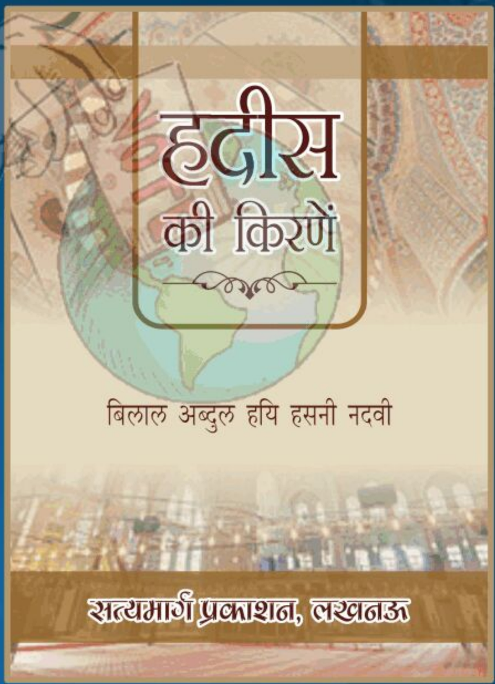

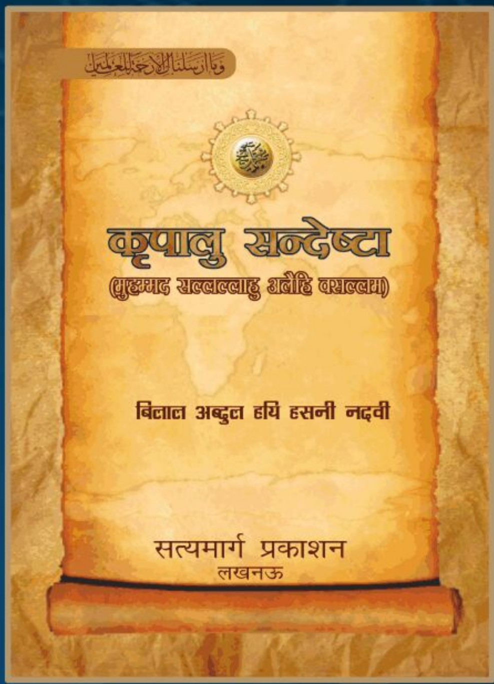

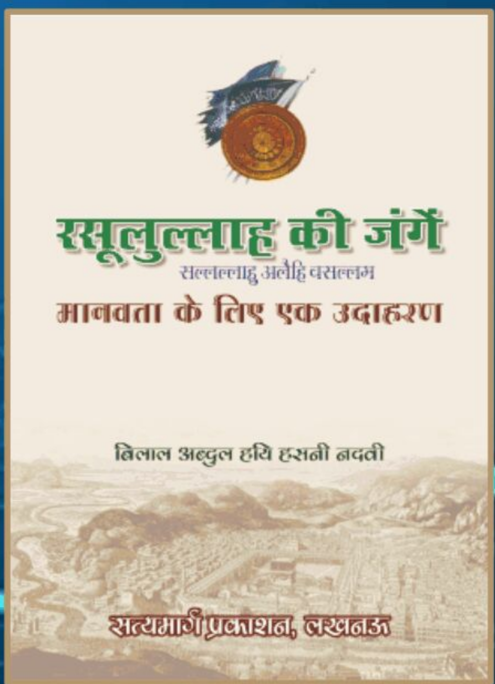

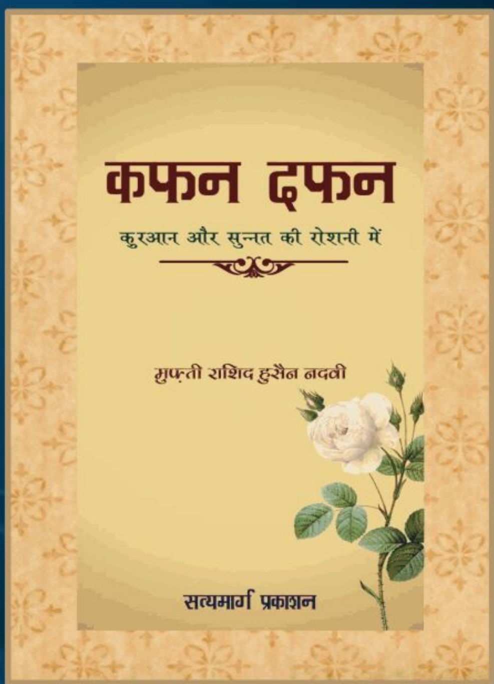

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.